Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○

(सूरत आले-इम्रान आयत :17)

अनुवाद: (यह उन लोगों के लिए है) जो कहते हैं कि हे हमारे रब्ब! हम ईमान ले आए अत: हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 4

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

17 जमादी अव्वल 1440 हिजरी कमरी 24 सुलह 1397 हिजरी शमसी 24 जनवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

प्रिय जनो! यह धर्म और उसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सेवा का समय है। इस समय को ग़नीमत समझो कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा। ज़कात देने वाले को चाहिए कि अपनी ज़कात इसी जगह भेजे और प्रत्येक मनुष्य फ़ुज़ूलखर्ची से स्वयं को बचाए और इस मार्ग में रुपया लगाए और हर हाल में अपनी सच्चाई का प्रमाण प्रस्तुत करे, ताकि ख़ुदा की अनुकम्पा और रूहुलकुदुस का पुरस्कार पाए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ये समस्त उपदेश उनका हम उल्लेख कर चुके हैं, इस का उद्देश्य है कि हमारी जमाअत ख़ुदा के भय में उन्नति करे और वह इस योग्य हो जाए कि ख़ुदा का आक्रोश जो धरती पर भड़क रहा है वह उन तक न पहुँचे ताकि इन प्लेग के दिनों में वे विशेष तौर पर सुरक्षित रखे जाएँ। **सच्चा संयम (आह बहुत ही कम है सच्चा संयम)** ख़ुदा को प्रसन्न कर देता है और ख़ुदा साधारण तौर पर बल्कि निशान के तौर पर पूर्ण संयमी को संकट से बचाता है। प्रत्येक धोखेबाज़ या मूर्ख संयमी होने का दावा करता है परन्तु **संयमी वह है** जो ख़ुदा के निशान द्वारा संयमी सिद्ध हो। प्रत्येक कह सकता है कि ख़ुदा से प्रेम करता हूं परन्तु ख़ुदा से प्रेम वह करता है जिसका प्रेम आकाशीय साक्ष्य से सिद्ध हो। प्रत्येक कहता है कि मेरा धर्म सच्चा है, परन्तु सच्चा धर्म उस व्यक्ति का है जिस को इसी संसार में प्रकाश प्राप्त होता है। प्रत्येक कहता है कि मुझे **मुक्ति** प्राप्त होगी, परन्तु इस कथन में सच्चा वह व्यक्ति है जो इसी संसार में मुक्ति के प्रकाश देखता है। अत: तुम प्रयास करो कि ख़ुदा के प्यारे हो जाओ ताकि तुम्हारी प्रत्येक मुसीबत से सुरक्षा की जाए। पूर्ण संयमी प्लेग से सुरक्षित रहेगा क्योंकि वह **ख़ुदा की शरण** में है। अत: तुम पूर्ण संयमी बनो। ख़ुदा ने जो कुछ प्लेग के संदर्भ में कहा, तुम सुन चुके हो। वह एक आक्रोश की अग्नि है। अत: तुम स्वयं को उस अग्नि से बचाओ। जो मनुष्य सच्चे तौर पर मेरा अनुसरण करता है और उसके अन्दर कोई छल-कपट, आलस्य, लापरवाही नहीं है और न अच्छाई के साथ बुराई को मिलाता है उसकी रक्षा की जाएगी। परन्तु वह जो इस मार्ग में सुस्ती से क़दम उठाता है और संयम के मार्गों पर पूरे तौर पर क़दम नहीं उठाता या संसार पर गिरा हुआ है वह स्वयं को परीक्षा में डालता है। प्रत्येक पहलू से ख़ुदा के आदेशों का पालन करो। प्रत्येक मनुष्य जो स्वयं को बैअत करने वालों में शुमार करता है, उसके लिए अब समय है कि अपने धन से भी इस सिलसिले की सेवा करे। जो मनुष्य एक पैसे की हैसियत रखता है वह सिलसिले के कार्यों के लिए प्रति माह एक पैसा दे। जो मनुष्य प्रति माह एक रुपया दे सकता है वह प्रति माह एक रुपया अदा करे। क्योंकि लंगरखाने के ख़र्चों के अतिरिक्त धार्मिक कार्य-कलाप भी बहुत सा ख़र्च चाहते हैं। सैंकड़ों अतिथि आते हैं, परन्तु अभी तक धन की कमी के कारण अतिथियों के लिए यथायोग्य सुविधाजनक मकान उपलब्ध नहीं, चारपाइयों का प्रबंध नहीं, मस्जिद को बढ़ाने की आवश्यकता भी सामने खड़ी है, पुस्तकें लिखने और प्रकाशित करने का कार्य विरोधियों की अपेक्षा अत्यन्त पीछे है। ईसाइयों की ओर से जहां पचास हज़ार पत्रिकाएँ और धार्मिक अख़बार प्रकाशित होते हैं, हमारी ओर से निरन्तर एक हज़ार भी प्रति माह प्रकाशित नहीं हो सकता। यही कार्य है जिनके लिए प्रत्येक बैअत करने वाले को अपनी सामर्थ्य अनुसार सहायता करनी चाहिए ताकि ख़ुदा भी उनकी सहायता करे। यदि प्रति माह निरन्तर उनकी सहायता पहुंचती रहे, चाहे थोड़ी ही हो तो अपेक्षाकृत उस सहायता से उत्तम है जो दीर्घ काल तक खामोश रह कर फिर किसी समय अपने ही विचार से की जाती है। प्रत्येक मनुष्य के प्रण का सत्य उसके सेवा भाव से पहचाना जाता है। प्रिय जनो! यह धर्म और उसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सेवा का समय है। **इस समय को ग़नीमत समझो** कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा। ज़कात देने वाले को चाहिए कि अपनी ज़कात इसी जगह भेजे और प्रत्येक मनुष्य फ़ुज़ूलखर्ची से स्वयं को बचाए और इस मार्ग में रुपया लगाए और हर हाल में अपनी सच्चाई का प्रमाण प्रस्तुत करे, ताकि ख़ुदा की अनुकम्पा और रूहुलकुदुस का पुरस्कार पाए। क्योंकि **यह पुरस्कार** उन लोगों के लिए तैयार है जो इस सिलसिले में दाख़िल हुए हैं। **हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** पर जो रूहुलकुदुस की आभा प्रकाशमान हुई थी, वह प्रत्येक आभा से बढ़कर है। रूहुलकुदुस कभी किसी नबी पर कबूतर के रूप में प्रकट हुआ और कभी किसी नबी या अवतार पर **गाय** के रूप में किसी पर **कछवे** या **मगरमच्छ** के रूप में प्रकट हुआ पर मनुष्य के रूप में प्रकट होने का समय न आया जब तक कि **इंसाने कामिल** अर्थात् हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का **प्रादुर्भाव न हुआ।** जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रादुर्भाव हो गया तो आप पर कामिल इन्सान होने के नाते रूहुलकुदुस के प्रकाश की शक्तिशाली आभा ने धरती से आकाश तक के स्थान को भर दिया था। इसलिए क़ुर्आनी शिक्षा **अनेकेश्वरवाद** से सुरक्षित रही। परन्तु चूंकि ईसाई धर्म के **पेशवा** पर रूहुलकुदुस अत्यन्त **निर्बल** रूप में प्रकट हुआ था अर्थात् **कबूतर** के रूप में। इसलिए अपवित्र रूह अर्थात् शैतान उस धर्म पर **विजयी हो गया।** उसने अपनी श्रेष्ठता और शक्ति इस प्रकार प्रदर्शित की कि एक भयानक **अजगर** की भांति आक्रमण सब पथ-भ्रष्टताओं से प्रथम नम्बर पर रखा है और कहा कि निकट है कि आकाश और धरती फट जाएं और टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ कि धरती पर यह एक बहुत बड़ा पाप किया गया कि **मनुष्य को ख़ुदा का बेटा बनाया।** क़ुर्आन के आरम्भ में भी ईसाई विचारधारा का खण्डन और इसका उल्लेख है। जैसा कि आयत "इय्याका नअबुदो" और "वलद्दाल्लीन" से समझा जाता है। क़ुर्आन के अन्त में भी ईसाई दृष्टिकोण का खण्डन किया गया है जैसा कि सूरह-

قُلۡ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۔ اللّٰہُ الصَّمَدُ ۔ لَمۡ یَلِدۡ وَلَمۡ یُوۡلَدۡ

(सूरह अलइख़लास-2-4)

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-4)

जब हम इस बात की समीक्षा करते हैं कि इस्लाम, महिलाओं की धर्म के लिए सेवाएं, महिलाओं का धर्म के विकास के लिए भूमिका, महिला की धर्म के लिए बलिदान में पुरुषों की सेवाओं, उनकी भूमिका उनकी सेवाओं से कम समझता है तो जवाब नहीं में मिलेगा ।

*** कुरआन से हमें पता चलता है कि धर्म के इतिहास में महिला का बहुत स्थान है और महिला के सराहनीय कार्यों की अल्लाह तआला ने गवाही दी है और उल्लेख किया है और इन्हीं सराहनीय और महत्त्वपूर्ण कार्यों की वजह से महिला को उन पुरस्कारों में हिस्सेदार बनाया गया है जिन कार्यों की वजह से पुरुष उस इनाम के हकदार ठहराए गए हैं या सम्मानित किए गए हैं। इस्लाम की तो शुरुआत ही महिला के बलिदान से होती है।**

*** कुरआन को देख लें हर जगह मस्लों के बयान में, आदेशों और पुरस्कारों में स्त्री और पुरुष दोनों का उल्लेख है, अगर पुरुष की नेकी की चर्चा है तो महिला को भी नेक कहा गया है, पुरुष की इबादत का उल्लेख है तो महिला को भी इबादत करने वाली कहा गया है, जन्नत में पुरुष जाएंगे तो औरतें भी जाएंगी, जन्नत में पुरुष उच्च स्थान प्राप्त करेंगे तो महिलाएं भी करेंगी, अगर किसी नेक पुरुष के कारण उसकी पत्नी कम नेकी के बावजूद जन्नत में जा सकता है तो किसी उच्च प्रकार की नेकियाँ करने वाली महिला की वजह से कम नेकी करने वाला पति भी इस वजह से जन्नत में जा सकता है, जन्नत में अगर उच्च स्थान पर पुरुष अपनी नेकियों कारण होंगे तो इसी उच्च स्थान पर औरतें भी होंगी।**

* जलसा सालाना जर्मनी कि अवसर पर औरतों से सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मेहमानान किराम से मुलाकात

उसके बाद अफ्रीका के देशों जाम्बिया, नाइजर, घाना, सेनेगल, कांगो ब्राजील से आने वाले मेहमानों और वफद ने हुज़ूर अनवर ने मुलाकात की। इस मुलाकात का आयोजन अहमदिया मुस्लिम पैन अफ्रीकी एसोसिएशन जर्मनी की तरफ से किया गया था।

प्रारंभ में, हुज़ूर अनवर ने समीक्षा की कि लोगों की किन किन देश अलग-अलग देशों से सम्बन्ध है। इस दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आज इधर The Gambia के लोग अधिक हैं और घाना के कम हैं। यह पहली बार ऐसा हुआ, लेकिन यू.के के जलसा में ऐसा कभी नहीं होता। उस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने सभी दर्शकों को प्रश्न करने की अनुमति दी।

सबसे पहले एक गाना के अहमदी ने निवेदन किया कि हुज़ूर ने विभिन्न अवसरों पर अपने भाषणों में एक बात का उल्लेख कहा कि जो शिक्षक हैं वे बच्चों की प्रवृत्ति इस तरफ ले जाते हैं कि ख़ुदा की कोई हस्ती नहीं होती। इस तरह, वे बच्चों में ख़ुदा की हस्ती को नष्ट करना चाहते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :आपको बच्चों पर बहुत मेहनत करनी चाहिए। जब वे घर आते हैं तो आप लोगों को घर पर बेहतर प्रशिक्षण करना होगा। बच्चों को अधिक समय दें ताकि वे विश्वास कर सकें कि ख़ुदा तआला का अस्तित्व है। आज कई सारे सबूत उपलब्ध हैं। सोशल मीडिया को देखें। एक अफ्रीकी प्रोफेसर कहता है कि ख़ुदा कहाँ है? एक छोटी सी लड़की उसे जवाब देती है। वास्तव में, यह एक मजाक में है, लेकिन इस मजाक में, एक मजबूत तर्क ख़ुदा तआला के अस्तित्व का वर्णन करता है। इसलिए आप लोगों को बहुत मेहनत से इस विषय में काम करना होगा और साथ अपने उस्तादों को भी समझाएं कि जहां हम माता पिता अपने बच्चों की अपने धर्म के अनुसार और अपने मतलब के अनुसार प्रशिक्षण कर रहे हैं और उन्हें धार्मिक शिक्षा दे रहे हैं वहाँ शिक्षक बच्चों के धर्म से हट कर बात करते हैं और बच्चों के दिमाग को प्रभावित करते हैं। अत: आप लोग उन्हें कोई स्वतंत्रता नहीं दिला रहे हैं। स्वतंत्रता तो यह होगी कि उन्हें कुछ भी न कहा जाए उन्हें अपने फैसले ख़ुद करने दो जब वे परिपक्वता की आयु तक पहुंचें। एक बच्चा तो सकारात्मक दिमाग का मालिक नहीं होता है। बच्चा ख़ुद यह तय नहीं कर सकता कि यह सही है और क्या गलत है। हालांकि, इस बारे में पहली बात तो यह है कि आप अपने बच्चों के साथ अधिक समय व्यतीत करें। फिर दूसरी बात यह कि शिक्षकों से भी बात करें। ऐसे कई माता-पिता हैं जिन्होंने शिक्षक से बात की, बल्कि मुझे भी यह भी याद है कि जब मैं घाना में था, तो मेरे बच्चे ईसाई स्कूलों में पढ़ा करते थे। एक दिन मेरा बेटे यह शब्द मुंह से बोलने लगा कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला का पुत्र है। मैंने उसे बताया कि नहीं वह ख़ुदा के पुत्र नहीं बल्कि ख़ुदा के नबी हैं। ऐसी बात तुम्हें नहीं करनी चाहिए। एक दिन जब स्कूल में कुछ नज़्में बच्चों को पढ़ने के लिए कहा गया था, तो इस में कुछ शब्द थे कि ईसा अलैहिस्सलाम ईश्वर का पुत्र था। मेरे बेटे ने ये शब्द कहने से इंकार कर दिया। तो उन्होंने इस बारे में मेरी बेटी को भी बताया। आपको तीसरे विश्व के स्कूलों की व्यवस्था का तो पता ही है। इस पर उन दोनों को सज़ा दी गई और मारा गया। उन्हें तीन दिनों के लिए दंडित किया गया था। चौथे दिन मैं उधर गया और उनसे कहा कि हमारा विश्वास यह है कि ईसा ईश्वर का पुत्र नहीं बल्कि उसके पैगंबर हैं। आज, मेरे बच्चे यह नहीं कहेंगे कि यीशु ईश्वर के पुत्र हैं। या तो वे इस मौके पर चुप रहेंगे या वे कहेंगे कि वे ख़ुदा के नबी थे। इस पर स्कूल वालों ने कहा कि ठीक है। आज के बाद उन्हें कुछ नहीं कहा जाएगा। प्रत्येक स्थान पर कोई न कोई मुश्किल होती जिस का माता-पिता को सामाना करना होता है लेकिन इन परेशानियों को आपको हल करना होता।

एक व्यक्ति ने पूछा कि कई लोगों ने यह महसूस किया कि जब उनकी हुज़ूर अनवर से मुलाकात होती है तो वह जब मुलाकात के लिए इंतजार कर रहे होते हैं तो सोच रहे होते हैं कि हुज़ूर अनवर से क्या बातें करनी हैं और क्या सवाल करना है, लेकिन मुलाकात के दौरान ये बातें भूल जाती हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह मेरी गलती नहीं है। यदि आप नहीं भूले जो आप ने मुलाकात से पहले मुझ से बात करनी थी, तो इसका मतलब यह है कि फिर जो कुछ भी लोग कहते हैं यह ग़लत है। हां कभी-कभी कुछ लोग इतने भावुक हो जाते हैं कि वे अपने विचार

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

सदैव अंजाम भला होने के लिए दुआ करनी चाहिए।

साक्षात आज्ञापालन तथा इताअत के नमूने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी हज़रत उबैद बिन ज़ैद अन्सारी, हज़रत ज़ाहिर बिन हराम हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब, हज़रत अबाद बिन खशखाश और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्द, हज़रत हारिस बिन औस बिन मआज़रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन

इस्लामी सल्तनत के ख़िलाफ वादों का तोड़ना, युद्ध की तहरीक, अश्लील बोलना, षड्यंत्र हत्या आदि के कामों में शामिल। यहूदी प्रमुख काब इब्न अशरफ की हत्या, और आरोप लगाने वालों के आरोपों का उत्तर।

अल्लाह तआला इस्लाम को उन फित्नों से बचाए, और इस ज़माने में, अल्लाह तआला के भेजे हुए हादी को जा इस्लाम के सुधार के लिए आया है स्वीकार करने की तौफीक़ प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 7 दिसम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबा का ज़िक्र होगा उनमें पहला नाम हज़रत ओबैद बिन ज़ैद अंसारी का है। उन का सम्बन्ध कबीला बनू अजलान से था और वह जंग बदर तथा जंग उहद की जंग में शामिल थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 448 उबैद बिन ज़ैद प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत मुआज़ बिन राफे अपने पिता से वर्णन करते हैं कि मैंने अपने भाई हज़रत ख़ल्लाद बिन राफे के साथ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक कमज़ोर ऊँट पर सवार होकर बदर की तरफ निकला। हमारे साथ ओबैद बिन ज़ैद भी थे। यहां तक कि हम बरीद के स्थान पर पहुंचे, जो रौहा के स्थान के पीछे है, तो हमारा ऊंट बैठ गया। पहले भी यह कुछ घटना दूसरे साहबी के बारे में वर्णन हो चुकी है। तो कहते हैं कि हमारा ऊंट बैठा है। तो मैंने दुआ की, हे अल्लाह तेरे लिए नज़र मानते हैं कि अगर हम मदीना पहुंच जाएं हैं, तो हम इस को कुर्बान कर देंगे। कहते हैं कि हम इसी अवस्था में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुज़र हमारे पास से हुआ। आप ने हम से पूछा कि तुम दोनों को क्या हुआ? हम ने आपको सब कुछ बताया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास रुके। आप ने वज़ू फरमाया और बचे हुए पानी में अपना थूक डाला। फिर आप के आदेश से हमने ऊंट का मुंह खोल दिया। आप ने ऊंट के मुंह में थोड़ा पानी डाला, फिर उस के सिर पर, उसकी गर्दन पर, उसके चेहरे पर, उसकी पीठ पर, और कुछ पानी उस की दुम पर डाला। फिर आपने दुआ की, हे अल्लाह ! राफे और ख़ल्लाद को इस पर सवार कर के लेजा। फिर यह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो तशरीफ ले गए। हम भी चलने के लिए खड़े हो गए और हम भी चलने लगे यहां तक कि हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मनसफ के स्थान पर पा लिया। वहां पहुंच गए और उन से जाकर मुलाकात की हमारा ऊंट काफला में सब से आगे था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें देखा तो मुस्कुरा दिए। हम टलते रहे यहां तक कि बद्र के स्थान तक पहुँच गए और बद्र से वापसी पर भी कहते हैं कि जब हम मुसल्ला के स्थान पर पहुँचे, तो हमारा ऊँट नीचे बैठ गया और फिर मेरे भाई ने उसको ज़िब्ह कर दिया और उसका गोश्त सदका कर दिया। तो इस में उनके साथ हज़रत ओबैद बिन ज़ैद भी शामिल थे।

(असदुल-ग़बाह भाग 2, पृ 181 मआज़ बिन राफे प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरुत 2002)

(इमतिआ इल असमा भाग 1, पृष्ठ 93 दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1999 ई)

(किताबुल मग़ाज़ी ल्लिवाक्दी जिल्द 1 पृष्ठ 39 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2013 ई)

हज़रत ज़ाहिर इब्न हराम अल्अशजई एक सहाबी थे। यह भी बदरी सहाबी हैं। उन का सम्बन्ध अशजअ कबीला से था। जंग बदर में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए थे। हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि गांव के रहने वाले जो थे उन में एक आदमी का नाम ज़ाहिर था। वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए गांव से उपहार लाता था और जब वह जाने लगता तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी आप को बहुत सारा धन दौलत दे कर रवाना करते थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे कि اِنَّ زَاهِرًا بَادِيَتُنَا وَنَحْنُ حَاضِرُوْهُ

कि ज़ाहिर हमारे गाव वाले दोस्त हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन से मुहब्बत रखते थे। हज़रत ज़ाहिर साधारण शक्ल तथा सूरत के आदमी थे। एक दिन इस तरह हुआ कि हज़रत ज़ाहिर बाज़ार में अपना कुछ सामान बेच रहे थे कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन के पास आए और उन्हें अपने सीने से लगा लिया। एक रिवायत आती है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पीछे से आकर उसकी आँखों पर हाथ रखा। हज़रत ज़ाहिर हुज़ूर को देख नहीं पाए। उन्होंने पूछा कौन है? मुझे छोड़ दो लेकिन जब उन्होंने मुड़ कर देखा, तो उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचान लिया। जब हज़रत ज़ाहिर ने आप को पहचान लिया थोड़ा सा मुड़ कर नीचे देखा तो नज़र आ गए होंगे। पहचानने का अर्थ यह है कि थोड़ा सा नीचे झुक कर देखा तो यह महसूस हुआ कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं तो अपनी कमर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मलना शुरू कर दिया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे मज़ाक़ में कहना शुरू कर दिया कि कौन इस ग़ुलाम को ख़रीदेगा?। हज़रत ज़ाहिर ने कहा, अल्लाह तआला के रसूल, फिर तो आप मुझे घाटे का सौदा पाएंगे। मुझे किस ने ख़रीदना है? इस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला के निकट तुम घाटे का सौदा नहीं हो? या फरमाया कि अल्लाह तआला के निकट तुम बहुत कीमती हो।

(असदुल ग़ाबाह भाग 2, पृष्ठ 98)(अल्इस्तियाब भाग 2, 509, ज़ाहिर बिन हराम दारुल जैल बैरुत 1992 ई) (अश्शमाइलुल मुहम्मदिया लित्तिरमिज़ी भाग 2 पृष्ठ 143, अहयाउत्तुरास अल्अरबी बैरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह घटना एक स्थान पर वर्णन की है। आप फरमाते हैं: इसी तरह, एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाज़ार में तशरीफ ले जा रहे थे आपने देखा कि एक ग़रीब सहाबी जो संयोग से बदसूरत भी थे, बहुत गर्मी के मौसम में सामान उठा रहे हैं और उनका सारा शरीर पसीने और धूल से भरा हुआ है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोशी से उनके पीछे चले गए और जिस तरह बच्चे खेल में चोरी छुपे दूसरे की आंखों पर हाथ रख कर कहते हैं और फिर चाहते हैं कि वह अंदाजा से बताएं कि किस ने उसकी आंखों पर हाथ रखा है इसी तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो वसल्लम ने ख़ामोशी से उसकी आंखों पर हाथ रख दिए उसने आपके मुलायम हाथों को टटोल कर समझ लिया कि यह रसूले करीम सल्लल्लाहो वसल्लम हैं तो मुहब्बत के जोश में उसने अपना पसीने से भरा हुआ

शरीर आप के शरीर के साथ मलना शुरू कर दिया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुराते रहे है और अन्त में आप ने फरमाया मेरे पास एक ग़ुलाम है क्या इस का कोई ख़रीदने वाला है? उसने कहा, अल्लाह तआला के रसूल! दुनिया में मेरा ख़रीदार कौन हो सकता है? आप ने फरमाया ऐसा मत कहो। ख़ुदा के निकट तुम्हारी बड़ी क़ीमत है।

(सैरे रूहानी पृष्ठ 489 प्रकाशन कादियान 2005 ई)

अत: अजीब किस्म की मुहब्बतों के लाभ पाए उन लोगों ने।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस मौके पर फरमाया

اِنَّ لِكُلِّ حَاضِرَةٍ بَادِيَةٌ وَبَادِيَةُ اٰلِ مُحَمَّدٍ زَاهِرُ بْنُ الْحَرَام

अर्थात प्रत्येक शहरी का कोई न कोई देहाती सम्बन्ध वाला होता है और आले मुहम्मद के देहाती समबन्ध वाले ज़ाहिर बिन हराम हैं ज़ाहिर बिन हराम बाद में कोफा में चले गए थे।

(अल्अस्तियाब भाग 2 पृष्ठ 509 ज़ाहिर बिन हराम, प्रकाशन दारुल जैल बैरुत 1992 ई)

अगले सहाबी, जिनका उल्लेख है, उसका नाम हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब है। आप हज़रत उमर के बड़े भाई थे और हज़रत उमर के इस्लाम स्वीकार करने से पहले इस्लाम स्वीकार किया था। यह आरंम्भिक हिजरत करने वाले थे। जंग उहद, जंग खंदक, हुदैबिया सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप का भाईचारा हज़रत मअन इब्न अदी के साथ किया था। ये दोनों जंगे यमामा में शहीद हुए थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 288 ज़ैद बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल जैल बैरूत 1990 ई)(अल्अस्तियाब भाग 2 पृष्ठ 550 ज़ाहिर बिन हराम, प्रकाशन दारुल जैल बैरुत 1992 ई)

जंगे उहद के दिन हज़रत उमर ने हज़रत ज़ैद को अल्लाह तआला की क़सम देकर फरमाया (हज़रत ज़ैद हज़रत उमर के बड़े भाई थे उनको कहा) कि मेरा कवच पहन लो। हज़रत ज़ैद ने कुछ देर के लिए कवच पहन लिया। जंग के समय फिर उतार दिया। हज़रत उमर ने कवच उतारने का कारण पूछा तो हज़रत ज़ैद ने जवाब दिया कि मैं भी उसी शहादत की इच्छा रखता हूं जिसकी आपको इच्छा है और दोनों ने कवच को छोड़ दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 289 ज़ैद बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल जैल बैरूत 1990 ई)

यह हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अपने ग़ुलामों का ख्याल रखो। उन्हें उसी में से खिलाओ। जो तुम खाते हो, और उन्हें वही पहनाओ जो तुम ख़ुद पहनते हो। और अगर उनसे कोई ग़लती हो जाए जिस पर तुम उन्हें माफ़ नहीं करना चाहते हो, तो हे अल्लाह के बंदो उन्हें बेच दो और सज़ा मत दो। जब मुसलमानों के पैर लड़ाई में उखड़े, तो हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब ज़ोर से पुकारने लगे, यह दुआ करने लगे, हे अल्लाह! मैं तुझ से अपने साथियों के भाग जाने पर माफी मांगता हूं और मुसल्लमा बिन कज़्ज़ाब और मुहकम बिन तुफैल ने जो काम किया है उस से तेरे निकट बरी होता हूं। फिर आप ने झंडे को मज़बूती से पकड़ा और दुश्मन की सफों में आगे बढ़ते रहे और अपनी तलवार के जौहर दिखाने लगे यहां तक कि आप शहीद हो गए।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 288 ज़ैद बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल जैल बैरूत 1990 ई)

जब हज़रत ज़ैद शहीद हो गए, तो हज़रत उमर ने फरमाया, अल्लाह तआला आप पर रहम करे। मेरा भाई दो नोकियों में मुझ पर प्राथमिकता ले गया - इस्लाम कबूल करने में मुझ से पहले, उन्होंने मुझ से पहले इस्लाम कबूल कर लिया और शहीद भी मुझ से पहले हो गया।

(अल-असाब: फी तमीज़िस्सहाब: ले इब्ने दरह अस्कलानी भाग 4 पृष्ठ 500 ज़ैद बिन अल-खत्ताब।)

एक रिवायत में कि हज़रत उमर ने मुतम्मिम बिन नौरह को अपने भाई मलिक बिन नौरह की याद में मरसिया(शेर) कहते सुना हज़रत उमर ने कहा कि अगर मैं तुम्हारी तरह अच्छे शेर कहता जैसे तुम ने अपने भाई के लिए कहे मुतम्मिम बिन नौरह कहा, अगर मेरा भाई दुनिया से इसी प्रकार गया होता, जैसे आप का भाई गया है तो मैं कभी उस पर दुखी न होता। इस पर हज़रत उमर ने कहा कि आज तक किसी ने मुझ से इस प्रकार की सांत्वना नहीं की जिस प्रकार की तुम ने की है

(अल्इस्तियाब भाग 2 पृष्ठ 553 ज़ैद बिन ख़त्ताब, प्रकाशन दारुल जैल बैरुत 1992 ई)

इस घटना की एक और विस्तृत रिवायत यह है कि हज़रत उमर ने हज़रत मुतअम बिन नौयरा से कहा कि तुम्हें अपने भाई का कितना खेद है। उन्होंने अपनी एक आंख की तरफ इशारा करते हुए कहा कि यह मेरी आंख इसी दु:ख में नष्ट हो गई है। मैं अपनी ठीक आंख से इतना रोया कि नष्ट होने वाली आंख ने भी आंसु बहाने में मदद की। हज़रत उमर ने कहा कि यह इतना बड़ा दु:ख है कि किसी को भी अपनी मौत का शोक नहीं होगा? फिर हज़रत उमर ने कहा अल्लाह ज़ैद बिन ख़त्ताब पर रहम करे। अगर मैं शेर कहने की शक्ति रखता तो मैं भी हज़रत ज़ैद की तरह रोता, जैसे तुम अपने भाई पर रो रहे हो। हज़रत मुतअम ने कहा, हे अमीरुल मोमिनीन! अगर मेरा भाई उसी तरह युद्ध में शहीद होता, जिस तरह से आपका भाई शहीद हुआ, तो मैं कभी इस पर रोता। यह बात हज़रत उमर के दिल को लगी और अपने भाई की तरफ से आप को तसल्ली हो गई। हज़रत उमर को अपने भाई का बहुत दु:ख था थे। आप फरमाया करते थे कि जब ठण्डी हवा चलती है तो मेरे पास ज़ैद की ख़ुशबू लाती है।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 289 ज़ैद बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल कुतुब बैरूत 1990 ई)

मुसल्लिमा कज़्ज़ाब के साथियों में से रज्जाल बिन उनफवह हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब ही के हाथों मारा गया। एक रिवायत में रज्जाल बिन उनफवह का नाम नहार भी आया है। यह वह व्यक्ति था जिसने इस्लाम स्वीकार किया था। हिजरत की और कुरआन का कारी था। फिर मुस्लिमा के साथ शामिल हो गया। (इसलिए हमेशा अन्जाम अच्छा होने की दुआ मांगनी चाहिए।) और उस से कहा कि मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि उन्होंने तुम्हें नबुव्वत में शामिल कर लिया है। यह बनू हनीफा के लिए सबसे बड़ा उपद्रव था। हज़रत अबू हुरैरह कहते हैं कि मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठा था। हमारे साथ एक रज्जाल बिन उनफहह भी था। आपने फरमाया कि तुम में से एक व्यक्ति है जिसकी दाढ़ी उहद के पहाड़ के समान आग में होगी, और वह क़ौम को गुमराह करेगा। यहां तक कि मैं और रज्जाल इब्न उनफवह शेष बचे थे। मैं हमेशा इस बारे में डरता था, यहां तक कि रज्जाल इब्न अनफवफा मुस्लिमा कज़्ज़ाब के साथ जा मिला। और उस ने उन की नबुव्वत की गवाही दी यह रज्जाल बिल उनफवह जंग जमामा में कत्ल हुआ और हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब ने उसे कत्ल किया।

(अल्इतिस्याब भाग 2 पृष्ठ 551-552 ज़ैद बिन ख़त्ताब, प्रकाशन दारुल जैल बैरूत)

हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब को अबू मरियम अल-हनीफा ने शहीद किया था। हज़रत उमर ने एक बार अबू मरियम से जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया, कहा, "क्या तुमने ज़ैद को शहीद किया था? उन्होंने कहा, हे अमीरुल मोमिनीन अल्लाह तआला ने हज़रत ज़ैद को मेरे हाथों सम्मानित किया और मुझे उन के हाथों अपमानित किया। हज़रत उमर ने अबू मरियम से कहा कि तुम्हारी राय में मुसलमानों ने उस दिन युद्ध में आपके कितने लोगों को मार डाला। अबू मरियम ने कहा कि 14 या उस से अधिक। हज़रत उमर ने कहा कि बैअसल कत्ल कि क्या ही बुरे कत्ल होने वाले हैं। अबू मरयम ने कहा कि सारी प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है जिस ने मुझे बचा कर रखा है क्योंकि मैंने उस धर्म की ओर रुख़ किया है जो उसे अपने पैगंबर और मुसलमानों के लिए पसंद फरमाया। हज़रत उमर, अबू मरियम की बात से बहुत ख़ुश हुए। अबू मरयम बाद में बसरा के क़ाज़ी भी बने।

(अल्इतिस्याब भाग 2 पृष्ठ 121 ज़ैद बिन ख़त्ताब, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 288-289 ज़ैद बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

अगले जिन सहाबी का वर्णन है उन का नाम हज़रत उबादह बिन ख़शख़ाश है। हज़रत उबादह बिन ख़शख़ाश का नाम वाक्दी ने अबदह बिन हसहास वर्णन किया है जब कि इब्ने मन्दह ने आप का नाम उबादह बिन ख़शख़ाश अन्बरी वर्णन किया है। बहरहाल इस का सम्बन्ध कबीला बिल्ली से था। हज़रत मुजज़र बिन ज़ियाद के चचेरा भाई थे। और उन की माता की तरफ से भाई थे। आप बनू सालिम के हलीफ थे।

(असदुल ग़ाबह भाग 3, पृष्ठ 53 उबादह बिन खशख़ाश)

हज़रत उबादह बिन ख़शख़ाश जंग बदर में शामिल हुए थे आप ने कैस बिन सायब को जंग बदर में क़ैद किया था। हज़रत उबादह बिन ख़शख़ाश उहद के दिन

शहीद हुए। और आप को हज़रत नौमान बिन मालिक और हज़रत मुजद्दि बिन ज़याद का साथ एक कब्र में दफन किया।

(असदुल-ग़ाबाह, भाग 3, पृष्ठ 157, आबाद ख़शख़ाश, प्रकाशक दारुल उलूम बैरुत 2003 ई)

(असदुल-ग़ाबाह, भाग 3, पृष्ठ 513) अबाद बिन हसहास प्रकाशन दारुल कुतुब बैरूत 2003 ई)

अगले सहाबी जिन का वर्णन होगा। उसका नाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्द है। उनके पिता का नाम जद्द इब्न कैस था। उसका उप नाम अबू वहब था। उन का सम्बन्ध अंसार के कबीला बनू सलीमा से था। हज़रत मआज़ बिन जबल माता की तरफ से भाई थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्द जंग बदर जंग उहद में शरीक हुए थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 430 अब्दुल्लाह बिन जद्द प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इमिया 1990 ई)

(असदुल-ग़ाबाह, भाग 3 पृष्ठ 196 अब्दुल्लाह बिन जद्द प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इमिया 1990 ई)

जंग तबूक के समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्दह के पिता अबू वहब से कहा कि क्या तुम इस साल हमारे साथ जंग के लिए निकलोगे? हज़रत अबू वहब ने कहा कि आब मुझे आज्ञा दें और फित्ना में न डालें। मैं नहीं जा सकता।आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने जो उस ने बहाना किया अजीब बहाना है कि मेरी क़ौम जानती है कि मैं औरतों को बहुत चाहने वाला हूं। अगर में बनी असफर अर्थात रौमियों की औरतों को देखूंगा तो अपने ऊपर काबू नहीं रख सकता। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस के मुंह मोड़ते हुए उस को आज्ञा दे दी। बहाना बना रहे हो छुट्टी दे दी न जाओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्दा को पता चला तो अपने पिता के पास आए और उन से कहा कि आप ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात का क्यों इन्कार किया? अल्लाह तआला की कसम आप तो बनी सलमा में सबसे अमीर हैं और आज इसमें भाग लेने का अवसर है। न आप ख़ुद जंग के लिए निकतले हैं न ही किसी को सवारी प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि हे मेरे बेटे! अब बेटे के सामने एक और बहाना है, और वह यह है कि मेरे बेटे मैं क्यों इस गर्मी और तंगी के मौसम में बनू असफर की तरफ निकलूं। अल्लाह की कसम मैं तो ख़ुरबा(जहां बनू सलमा के घर थे) मैं मौजूद अपने घर में भी इन के भय से अपने आप को सुरक्षित नहीं समझता। रोमियों का बहुत डर था, भय था। यह एक डरपोक आदमी था। तो क्या मैं उनके ख़िलाफ जाऊं और उनके ख़िलाफ लड़ाई में शामिल हूं। हे बेटे अल्लाह की कसम मैं तो जमाना की गर्दिश से बहुत अच्छी तरह से परिचित हूं। मुझे पता है कि क्या स्थितियां हैं, आज कुछ हैं कल कुछ हैं। इन की यह बातों को सुन कर हज़रत अब्दुल्लाह अपने पिता से सख्ती से पेश आए और कहा, "अल्लाह तआला की कसम, आप में मुनाफकत पाई जाती है और अल्लाह तआला आपके बारे में ज़रूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुरआन में कुछ नाज़िल करेगा। जिसे सब पढ़ लेंगे अल्लाह तआला सब पर प्रकट कर देगा कि आप मुनाफिकों में से हैं। हज़रत अब्दुल्लाह के पिता ने इस पर अपना जूता उतार कर उन के मुंह पर मारा। अब्दुल्ला वहां से चला गए और अपने पिता से बात नहीं की।

(किताबुल मग़ाी वाकदी भाग 2 पृष्ठ 381 जंग तबूक दारुल कुतुब बैरुत 2004 ई)(वफाउल वफा भाग 4 पृष्ठ 67 प्रकाशन अल्मकत्बा अलहक्कानिया पेशावर)

जद्द इब्न क़ैस जो हज़रत अब्दुल्लाह के पिता थे एक स्थान पर असदुल ग़ाब: में लिखा है कि उन के बारे में मुनाफकत का ध्यान किया गया है। यह हुदैबिय: मे शामिल थे परन्तु जब लोगों ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की तो उस समय यह बैअत में शामिल नहीं थे और कहा यह जाता है कि बाद मैं उन्होंने तौब: कर ली और उन की वफात हज़रत असमान की ख़िलाफत के ज़माना में हुई।

(असदुल-ग़ाबाहा भाग 1 पृष्ठ 521 जद बिन क़ैस, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 2003 ई)

अगले जिन सहाबी का वर्णन है यह हारिस बिन औस बिन मआज़ हैं। आप कबीला औस के सरदार हज़रत सअद बिन मआज़ के भतीजे थे। जंग बदर तथा उहद में शामिल हुए। उन के बारे में कहा जाता है कि जंग उहद में शहीद हुए परन्तु कुछ दूसरी रिवायतों से पता चलता है कि आप जंग उहद में शहीद नहीं हुए थे। अत: जैसा कि हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह तआला अन्हा वर्णन करती हैं कि मैं जंगे ख़दक के अवसर पर लोगों के कदमों के अनुकरण करते हुए निकली। मैंने अपने पीछे से ज़मीन की आवाज़ सुनी। पलट कर देखा तो हज़रत साद इब्न मुआज़ को देखा, और आप का भतीजा हारिस बिन औस भी आप के साथ था। जो अपनी ढाल लिए हुए था। यह रिवायत इस बात पर प्रमाण है कि आप उहद के बाद भी जीवित थे।

(असदुल -ग़ाबाह, भाग 1 पृष्ठ 589, हारिस बिन औस इब्न मुआज़, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई) (मसनद अहमद बिन हंबल जिल्द 8 पृष्ठ 256 हदीस आयशा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1998 ई)

हज़रत हारिस के बारे में वर्णन किया गया है आप उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने काब बिन अशरफ़ को कत्ल किया था और हमले के दौरान आप के पैर में घाव लगा था और ख़ून बहने लगा। सहाबा आप के उठाकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आए।

(सहीह बुख़ीरी किताबुल मुग़ाज़ी बाब कत्ल कअब बिन अशरफ हदीस नम्बर 4037)

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 334 दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

कअब बिन अशरफ वह व्यक्ति था जो मदीना के सरदारों में से था और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समझौते में शामिल था लेकिन समझौता करने के बाद में उसने उपद्रव फैलाने की कोशिश की, और उसे कत्ल करने का आदेश आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया। बहरहाल उस समय उस के घायल होने की घटना है उस की व्याख्या उमदतुल क़ारी में और अधिक विस्तार से है और यह है कि मुहम्मद इब्न मुस्लिम: ने अपने साथियों के साथ जब कअब बिन अशरफ हमला किया और उस को कत्ल किया तो उनके एक साथी हज़रत हारिस बिन औस को तलवार की एक नोक लगी और वह घायल हो गए। इसलिए आपके साथी उन्हें जल्दी से उठा कर मदीना पहुंचे और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए, अत: आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हारिस बिन औस के घाव पर अपना थूक लगाया, और इस के बाद उन्हें कोई तकलीफ नहीं हुई ।

(उमदतुल क़ारी भाग 17 पृष्ठ 179, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कत्ल कअब बिन अशरफ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इमया बैरूत ।

कअब बिन अशरफ की हत्या क्यों की गई, उसका संक्षिप्त विवरण पहले एक अवसर पर उल्लेख किया गया था। अधिक विस्तार, जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने वर्णन की है। कुछ बातें वहीं हैं जैसे कअब एक यहूदी था, लेकिन यह वास्तव में यहूदी नस्ल नहीं था, बल्कि अरब था। उसका पिता अशरफ बनू नबहान का एक चतुर और सफल व्यक्ति थे, जिस ने मदीना में आकर बनू नज़ीर के साथ संबंध बनाए, और फिर उन का सहयोगी बन गया। आख़िरकार, उसने इतनी शक्ति और ताक़त पैदा की कि कबीला के रईस, अबू राफेअ बिन अबी अलहकीक ने अपनी बेटी उस को अपने संबंध में दे दी। इस लड़की के गर्भ से कअब पैदा हुआ था, जिस ने बड़े होकर अपने पिता से ऊंचा दर्जा प्राप्त किया, यहां तक कि उसे यह सम्मान प्राप्त हुआ कि सारे अरब के यहूदियों ने इसे अपना सरदार स्वीकार कर लिया। कअब एक सुन्दर सूरत वाला होने के अलावा बहुत अच्छा शायर भी था, बहुत अच्छी तकरीर करता था। और कवि भी था बहुत धनी व्यक्ति था और अपनी क़ौम के विद्वानों और अन्य लोगों को दान आदि देकर अपने हाथ के नीचे रखता था। लेकिन नैतिक दृष्टिकोण से वह बहुत ही गंदी प्रवृति का आदमी था। गुप्त चालों और फित्नों के फैलाने में उसे कमाल प्राप्त था।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मदीना हिजरत की तो कअब बिन अशरफ ने अन्य यहूदियों के साथ मिल कर समझौते में शामिल हो गया। यह लम्बा विवरण आप ने लिखा है। मैं कुछ स्थानों से संक्षेप में वर्णन करूंगा। फिर भी, उस समझौते में भाग लेना जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और यहूद के मध्य आपसी मित्रता और शांति और प्रेम और आपसी सुरक्षा के बारे में लिखा गया था। लेकिन अंदर ही अन्दर कअब के दिल में जलन और हसद की आग जलने लगी। वह समझौते में शामिल तो हो गया था, लेकिन उसके दिल में एक फित्ना था, मुनाफकत थी और शत्रुता, तथा द्वैष था, जिसके कारण वह उस आग में जल रहा था, और द्वेष तथा हसद के कारण उसने गुप्त चालों से इस्लाम और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विरोद्ध शुरू कर दिया। अत: यह लिखा है कि हर साल कअब यहूदी विद्वानों और उलमा को बहुत सी ख़ैरात दिया करता था, लेकिन जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत के बाद, वे लोग अपने वार्षिक वज़ीफे लेने के लिए उसके पास गए तो उस ने बातों

बातों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन किया और उनसे कहा, अपनी धार्मिक किताबों के आधार पर तुम्हारी क्या राय है, कि यह व्यक्ति सच्चा है या नहीं?" उन्होंने कहा कि ज़ाहिरी तौर पर यह वही नबी मालूम होता है जिस का हमसे वादा किया गया है। इस उत्तर पर कअब जो हसद तथा द्वेष रखता था नाराज़ हो गया, और उन्हें बहुत बुरा कहा और जो दान उन्हें दिया, जो वज़ीफा लगा हुआ था वह न दिया। यहूदी उल्मा की जब रोज़ी बन्द हो गई तो तो कुछ समय बाद वह कअब के पास गए और कहा कि लक्षणों को समझने में हमसे ग़लती हुई। हमने विचार किया है, वास्तव में, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह नबी नहीं हैं जिन का वादा दिया गया था। बहरहाल इस जवाब से कअब का मतलब हल हो गया हल हो गया था और उसने उनका स्वागत किया और उस ने ख़ुश होकर उन्हें ख़ैरात दी। हालाँकि, यह एक धार्मिक विरोध था, हज़रत मियां बशीर अहमद साहिब ने लिखा है कि यह धार्मिक विरोध था और यह धार्मिक विरोध कोई आपत्तिजनक बात नहीं है, जिस पर कोई भी कदम उठाया जाना चाहिए या कअब को दोषी माना जाए है। तथ्य यह है कि इसके बाद, कअब का विरोद्ध अधिक ख़तरनाक रूप धारण कर गया था, और जंग बदर के बाद तो, उसने ऐसा रवैया अपनाया जो बहुत ही भयानक और घातक था, और मुसलमानों के लिए कई ख़तरनाक परिस्थितियां पैदा हो गईं। सबसे पहले, कअब यह मानता था कि मुस्लमानों के ईमान का जोश एक अस्थाई बात है और वह समाप्त हो जाएगा तथा वह अपने धर्म की तरफ वापस आ जाएगें लेकिन जब बदर की लड़ाई एक असामान्य जीत प्राप्त हुई और कुरैश के अधिकांश सरदार मारे गए, तब वह सोचने लगा और फिर उसने इस्लाम के विनाश और तबाही को का पूर्ण इरादा कर लिया। उसके द्वेष तथा हसद का प्रकटन उस समय हुआ जब बद्र के समय लोगों ने कहा कि हमने मक्का के काफिरों पर जीत हासिल की है, तो उस ने बहुत कहा कि यह एक झूठ है और यह एक बुरी ख़बर है। लेकिन, जैसा कि उल्लेख किया गया है, यह खबर सच साबित होने के बाद उस का ग़ुस्सा उग्र हो गया। उसके बाद,जब बदर की जीत के बाद मुस्लिम मक्का लौट आए, तो उस ने मक्का की यात्रा की और वहां जाकर मक्का के लोगों को अपनी बातों और अपने भाषणों और शायरी के माध्यम से कुरैश के दिलों में सुलगती हुई आग को और अधिक भड़काया तथा तेज़ किया। और उनके दिल में मुसलमानों के खून की न बुढने वाली प्यास को पैदा किया। और उनकी छातियां बदले की आग से भर दीं। जब कअब के उकसावों ने उसकी भावनाओं में बहुत तेज़ी पैदा कर दी की, तो वह उन्हें काबा के आंगन में ले गया, उनके हाथ में काबा के पर्दे दिए, और उन से कसमें लीं। कि जब तक इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुनिया से समाप्त नहीं करते, तब तक वे आराम में नहीं बैठेंगे। कहा जाता है कि इन शब्दों ने मक्का ने ज्वालामुखी सा वातावरण पैदा कर दिया। फिर वह दूसरे कबीला की ओर मुड़ा और हर कबीला में गया और मुसलमानों के ख़िलाफ लोगों को भड़काया, साथ ही मुस्लिम महिलाओं पर भी अपने शेयरों में गंदे और अश्लील वर्णन किए यहां तक कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के परिवार की औरतों का भी गन्दे रूप में वर्णन किया। और अपने शेयरों का बहुत वर्णन किया। अन्त में उस ने सीमा यह कर दी कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कत्ल की साज़िश की और आपको किसी दावत आदि के बहाने से अपने मकान पर बुलाकर कुछ युवा यहूदियों से आपको आप क़त्ल करवाने की साज़िश की। लेकिन अल्लाह तआला की कृपा से समय पर सूचना मिल गई और यह साज़िश सफल नहीं हुई।

जब अवस्था यहां तक पहुंची और कअबा के ख़िलाफ वादा तोड़ने, विद्रोह, जंग की तहरीक, फित्ना फैलाने, अश्लील बकने और साजिशों के सबूत मिल गए तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो उस समझौता की दृष्टि से आप के मदीना आने के बाद मदीना के लोगों के मध्य हुआ था मदीना के लोकतांत्रिक साम्राज्य की स्थापना हुई, और आप उनके अध्यक्ष और शासक बने। आपने यह फैसला किया कि कअबा बिन अशरफ अपने कार्यों के कारण कत्ल योग्य है और अपने साथियों से कहा कि उसे कत्ल कर दिया जाए। लेकिन उस समय कअब के फित्ना के कारण मदीना का माहौल ख़राब हो रहा था कि अगर उसे एलान कर के कत्ल किया जाता तो यह ख़तरा था कि मदीना में गृह युद्ध शुरू हो जाता और फिर पता नहीं कि कितना ख़ून हो और इसलिए इस अवसर पर, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस युद्ध और फित्ने फसाद को रोकने के लिए यह फैसला किया कि इसे चुपचाप मार दिया जाए और इसके लिए आपने यह कर्तव्य कबीला औस के एक सहाबी मुहम्मद बिन मुस्लिमा के सुपुर्द फरमाई और इस बात की नसीहत फरमाई की वह जो भी तरीका धारण करें कबीला सअद के रईस सअद बिन मुआज़ के परामर्श से उस पर पालन करें। तो मुहम्मद बिन मुस्लिम: ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल ख़ामोशी से कत्ल करने के कोई बहाना आदि बनाना होगा, जिसकी मदद से कअब को उसके घर से बाहर निकालना होगा तो आप ने फरमाया अच्छा(जो भी तुम तरीका धारण करना चाहो तो करो) अत: मुहम्मद इब्न मुसलिमा ने सअद बिन मुआज़ के परामर्श से अबुनाइला: और दो तीन और साथियों के साथ सअद के मकान पर पहुंचे, और कअब से कहा कि हमारे साहब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम से सदक़ा मांगा है। आजकल हम तंग हैं, तुम हमें कुछ ऋण दे सकते हो? यह सुनकर वह बहुत खुश हुआ और कहा कि वह दिन दूर नहीं जब तुम इस व्यक्ति से बेज़ार हो जाओगे और इसे छोड़ दोगे। तो मुहम्मद ने जवाब दिया कि ख़ैर हम तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण धारण कर चुके हैं। और अब हम यह देख रहे हैं कि इसका अन्जाम किया होगा।" लेकिन तुम मुझे बताओ कि कर्ज़ दोगे या नहीं? कअबा ने कहा हाँ हाँ मैं दे दूंगा, लेकिन कुछ चीज़ गिरवी रखो। उन्होंने कहा कि क्या? तो उस हत भागे ने कहा पहली बात यह कही कि अपनी महिलाओं को मेरे पास रहन रख दो। उन को बहुत ग़ुस्सा आया कि तुम्हारे जैसे आदमी के पास हम अपनी औरतें रख दें। उसने कहा अच्छा फिर बेटे दे दो उन्होंने कहा कि यह भी संभव नहीं है। हम सारे अरब के ताने अपने सर पर नहीं ले सकते। यदि तुम मेहरबानी करो तो, अपने हथियार तुम्हारे पास बंधक रखते हैं। तो कअबा उससे सहमत हो गया। मुहम्मद बिन मुस्लिम: और उसके साथी रात को आने का वादा कर के वापस चले गए, और जब रात हुई तो यह लोग अपने हथियार खुले तौर पर लाए। उसे बुलाया, उसे घर से बाहर लाए, उस पर काबू पाया और फिर उन्होंने उसे मारा डाला। जब कत्ल किया तो हज़रत हारिस का जो ज़िक्र किया है वह घायल हो गए थे, उनको अपने लोगों की तलवार लग गई थी। और फिर जब उस को कत्ल किया तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, और इस कत्ल की सूचना दी।

जब सुबह उसकी हत्या की ख़बर का पता चला, तो शहर में बहुत सनसनी फैल गई। सभी यहूदी जोश में आ गए। दूसरे दिन, अर्थात अगले दिन, यहूदियों का एक प्रतिनिधिमंडल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ। और शिकायत की कि हमारा सरदार कअब बिन अशरफ को इस तरह से मार दिया गया था, फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुन कर इन्कार नहीं किया न यह फरमाया कि अच्छा मुझे नहीं पता, ऐसी कोई बात नहीं हुई। आपने फरमाया कि आप जानते हैं कि कअब कौन कौन से अपराध का करने वाला था। फिर आपने कअब, का वादा तोड़ना, जंग की तहरीक, उपद्रव, अश्लील कहना साज़िश आदि के कार्यों को याद दिलाया, जिस पर वे लोग डर कर ख़ामोश हो गए। तब उनका जोश ठंडा हो गया। उन्होंने पाया कि हां, यह बात तो सच है और उसे यही सज़ा मिलनी चाहिए थी। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा, तुम्हें चाहिए कि कम से कम भविष्य के लिए शांति और सहयोग के साथ एक समझौता होना चाहिए और कम से कम बुराई और शरारत न करें। अत: यहूदियों की रज़ामन्दी के साथ लिए एक नया समझौता लिखा गया था, और यहूदियों ने मुसलमानों के साथ शांति से रहने और शरारत और उपद्रवों के तरीकों से बचने का वादा किया था, और यह अहद नामा हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला को सुपुर्द किया गया था। इतिहास में किसी भी जगह पर ज्ञात नहीं है, कि यहूदियों ने इस के बाद कभी भी कअब बिन अशरफ की हत्या का उल्लेख किया, और मुसलमानों पर आरोप लगाया, क्योंकि उनके दिलों ने महसूस किया कि कअब उनकी सज़ा के

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

योग्य सजा तक पहुंच गया था।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि पश्चिमी इतिहासकार बाद में यह आपत्ति करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक नाजायज़ हत्या करवाई और यह एक ग़लत बात थी। इसलिए वह लिखते हैं कि यह कोई नाजायज़ कत्ल नहीं थी। क्योंकि कअब बिन अशरफ ने मुसलमानों के साथ एक नियमित शांति समझौते पर सहमति व्यक्त की थी और मुसलमानों के ख़िलाफ कार्रवाई करना तो दूर की बात है, उन्होंने इस बात का वादा किया था कि वह हर बाहरी दुश्मन और मुसलमानों के ख़िलाफ मुसलमानों की मदद करेंगा और मुसलमानों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखेगा। उस ने इस समझौते को भी स्वीकार किया कि मदीना में मदीना के गणराज्य की स्थापना की गई है, और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस के अध्यक्ष होंगे और हर तरह के संघर्षों में आपका निर्णय सभी के लिए स्वीकार करना अनिवार्य है। अत: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि इतिहास यह साबित करता है कि इसी समझौते के तहत, यहूदी लोग अपनी ओर से अपने मामले आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवाओं में पेश करते थे, और आप उनमें आदेश जारी किए थे। अब, इन हालतों को देखते हुए कअब ने सभी वादों को तोड़ दिया, पीछे छोड़ दिया। मुसलमानों से बल्कि सच्चाई यह है कि समय की हुकूमत से ग़द्दारी की। यहाँ मुसलमानों से देशद्रोह का कोई सवाल ही नहीं है, उस ने समय के शासक से ग़द्दारी की किया क्योंकि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना की हुकूमत के सरदार थे और मदीना में उपद्रव और भ्रष्टाचार का बीजारोपण किया और देश में जंग की आग भड़ाकाने की कोशिश की थी। और मुसलमानों के ख़िलाफ अरब की कबीलों को ख़तरनाक रूप से भड़काया और मुस्लिम महिलाओं के बारे में अपनी शायरी में बुरा भला भी कहा। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कत्ल करने की योजना भी बनाई। ये सब ऐसी स्थिति में किया कि जब कि मुसलमान पहले से ही हर तरफ से पीड़ित थे, उनके लिए कठिन परिस्थितियां बनीं हुई थीं, और इन परिस्थितियों में कअब का अपराध, लेकिन कई अपराधों का संयोजन ऐसा नहीं था कि उसके ख़िलाफ कोई कदम न उठाया जाए। अत: यह कदम उठाया गया और हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि आजकल सभ्य कहलाने वाले देशों में बग़ावत, विद्रोह और जंग की तहरीक तथा कत्ल की चेष्टा करने वालों को यही सज़ी दी जाती है। फिर आपत्ति क्या है?

और फिर दूसरा सवाल कत्ल के तरीके का है कि इस को रात को चुपचाप क्यों मारा गया? तो इस के बारे में वह कहते हैं कि यह याद रखना चाहिए कि उस समय अरबों में कोई नियमित साम्राज्य नहीं था। फिर एक नेता तो निर्धारित कर लिया था परन्तु केवल उसी का फैसला नहीं होता था बल्कि अगर अपने अपने निर्णय करना चाहते थे, तो प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक कबीला स्वतंत्र और आज़ाद था। यदि समग्र रूप से संयुक्त निर्णय होते थे, तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आते थे और यदि अपने तरीके से कबीलों ने करने थे तो वे भी करते थे। तो इस अवस्था में वह कौन सी अदालत थी जहां कअब के ख़िलाफ मुकदमा दर्ज कर के नियमित मौत की सज़ा का आदेश दिया जाता। क्या यहूद को शिकायत की जाती जिन का वह सरदार था और जिसने ख़ुद मुसलमानों के साथ विश्वासघात किया था, दिन रात उपद्रव कर रहे थे? इसलिए,यह सवाल ही पैदा नहीं होता था कि यहूद के पास जाया जाता। कबीला सुलैम और गतफ़ान से सहायता मांगी जाती जो पिछले कुछ महीनों में मदीना पर छापा मारने के लिए तैयारी कर चुके थे। वे भी उनके कबीले थे, अत: यह स्पष्ट था कि उनसे भी कोई न्याय नहीं मिलना था। फिर आप लिखते हैं कि उस समय की स्थिति पर विचार करें और फिर सोचें कि मुसलमानों के निकट इस के अलावा और कौन सा रास्ता खुला था, जब एक आदमी का विद्रोह तथा जंग की तहरीक और कत्ल की साज़िश के कारण उस की ज़िन्दगी को अपने लिए और देश के लिए अमन के लिए ख़तरा पाते तो अपनी सुरक्षा के लिए उसे कत्ल कर देते क्योंकि यह बहुत अच्छा है कि एक शरारती आदमी तथा फसाद फैलाने वाला आदमी कत्ल हो जाए इसके स्थान पर कि बहुत से शान्ति वाले शहरियों की जान ख़तरा में पड़े और देश का अमन बर्बाद हो। अल्लाह तआला भी यही फरमाता है कि फित्ना जो है कत्ल से बड़ा है।

बहरहाल इस समझौता के दृष्टि से जो मुसलमानों और यहूदियों के बीच में हुआ, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक मामूली नागरिक का पद प्राप्त नहीं था, बल्कि आप उस लोकतांत्रिक साम्राज्य के अध्यक्ष स्वीकार किए गए थे, जो मदीना में स्थापित हुई थी और आप को यह अधिकार प्राप्त था कि सारे झगड़ोंके अवसरों पर जो निर्णय लेना चाहें लें। इसलिए यदि आपने देश के हित में कअबा के फित्ना के कारण उसे कत्ल के योग्य करार दिया था, तो यह ऐसी बात नहीं है कि,इस के लिए तेरह सौ वर्ष बाद इस्लाम पर आरोप करने वालों का यह आरोप व्यर्थ है। क्योंकि उस समय तो यहूदियों ने आपकी बात सुन ली उस पर कोई आपत्ति नहीं की और कभी आपत्ति नहीं की।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्निबय्यीन हज़रत मिर्ज़ी बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 467-473)

तो यह थी उसकी स्थिति तो बहरहाल यह उल्लेख हुआ था कि इस कत्ल में हारिस बिन मुआज़ा का कि यह भी इस कत्ल में शामिल थे, इस टीम में जो उसे कत्ल करने के लिए भेजी गई थी और जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और इस्लाम पर उग्रवाद का आरोप लगाते हैं वे सभी आरोप भी ग़लत थे। वह इस बात का अधिकारी था कि उसे सज़ा दी जाती और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे हुकूमत के प्रमुख के रूप में सज़ा दी। आज इन्हीं की घटनाओं पर समाप्त करता हूं।

अल्लाह तआला हमेशा इस्लाम को इन फित्नों से सुरक्षित रखे। आज, मुसलमानों की यही अवस्था है कि बजाय इसके कि इन पुरानी बातों से शिक्षा प्राप्त की जाती ख़ुद फित्नों में पड़े हुए हैं और ख़ुद फित्नों का कारण बने हुए हैं सरकारों के अन्दर भी और मुस्लिम सरकारों के भीतर भी। अल्लाह तआला इस्लाम को इन फित्नों से बचाए, और इस ज़माना में अल्लाह तआला के भेजे हुए हादी को जो इस्लाम के पुन: जागरण के लिए आया है स्वीकार करने की तौफीक़ प्रदान करे।

(अल्फ़ाज़ इंटरनेशनल 28 / दिसंबर 2018)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

"कुल हुवल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद लम यलिद वलम यूलद"

से समझा जाता है। क़ुर्आन के मध्य में भी ईसाई धर्म के उपद्रव का उल्लेख है। जैसा कि आयत "तकादुस्समावातो यतफ़त्तरना मिनहो" (मरयम-91) से समझा जाता है और क़ुर्आन से स्पष्ट है कि जब से संसार की रचना हुई, ख़ुदा की बनाई हुई वस्तुओं की उपासना और धोखा व कुटिलता के मार्गों पर ऐसा बल कभी नहीं दिया गया। इसी कारण मुबाहले के लिए भी ईसाई ही बुलाए गए थे न कोई अन्य अनेकेश्वरवादी। और यह जो रूहुलक़ुदुस इस से पूर्व पक्षियों या जानवरों के रूप में प्रकट होता रहा, इसमें क्या रहस्य था। समझने वाला स्वयं समझ ले। इतना हम भी कह देते हैं कि यह संकेत था इस ओर कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इन्सानियत इतनी प्रबल है कि रूहुलक़ुदुस को भी इन्सानियत की ओर खींच लाई। अत: तुम ख़ुदा की ओर से भेजे गए **ऐसे नबी के अधीन होकर हिम्मत क्यों हारते हो।** तुम अपने वह आदर्श प्रदर्शित करो जो फ़रिश्ते भी आकाश पर तुम्हारी सच्चाई और पवित्रता से आश्चर्यचकित हो जाएँ और तुम्हारी सुरक्षा और सलामती के लिए प्रार्थना करें। तुम एक मृत्यु धारण करो ताकि तुम्हें जीवन प्राप्त हो। तुम तामसिक आवेगों से अपने अन्त:करण को खाली करो ताकि ख़ुदा उसमें प्रवेश करे। एक ओर से पक्के तौर पर परित्याग करो और एक ओर से पूर्ण संबंध स्थापित करो। **ख़ुदा तुम्हारी सहायता करे।**

अब मैं समाप्त करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मेरी यह शिक्षा तुम्हारे लिए लाभप्रद हो और तुम्हारे अन्दर ऐसा परिवर्तन हो कि तुम धरती के नक्षत्र बन जाओ और धरती उस प्रकाश की आभा से प्रकाशमान हो जो तुम्हें तुम्हारे ख़ुदा से प्राप्त हो। हे ख़ुदा स्वीकार कर, पुन: स्वीकार कर।

अमन चैन है। फिर क्या अनिवार्य न था कि इस सरकार के उपकारों का धन्यवाद करते। इसी से

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 73 से 75)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

व्यक्त नहीं कर सकते हैं। खासकर वे लोगों जो पहली बार मिल रहे होते हैं। यह इस अवसर पर इन लोगों की भावनाओं के कारण होता है न कि कोई भय के कारण। मैं भी इंसान हूं। एक बार एक व्यक्ति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मिला और कांप रहा था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि भय मत करो। मैं भी एक इंसान हूं और एक महिला का बच्चा हूं, जिसे भोजन की भी आवश्यकता है। बहरहाल हम सभी इंसान हैं, लेकिन अगर सम्मान के कारण कोई भावना के कारण अपनी बात वर्णन न कर सके तो यह अलग बात है वरना मेरे से भयभीत होने का कोई कारण नहीं है।

एक अफ्रीकी मित्र, जो लंदन से थे, ने पूछा कि क्या अहमदी लड़की इस तरह के स्कूल में पढ़ाई कर सकती है जो ग़ैर-अहमदियों के अधीन चलने वाला हो?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "इस की मनाही इस प्रकार तो नहीं। अगर एक अहमदी लड़की एक ऐसे girl स्कूल में जो ग़ैर अहमदी के तहत बेहतर रंग में शिक्षा प्राप्त कर सकती है और वह वहाँ केवल धर्मनिरपेक्ष शिक्षा देते हैं तो इस बात में कोई हर्ज नहीं है कि ऐसे स्कूल में शिक्षा प्राप्त की जाए। आपका लंदन के साथ संबंध है, तो क्या आपके पास कोई ग़ैर अहमदी स्कूल है? आपके सभी बच्चे तो सरकारी स्कूल या फिर चर्च के स्कूल में पढ़ रहे हैं? यदि वे चर्च स्कूल में पढ़ सकते हैं तो गैर-अहमदी स्कूल में क्यों शिक्षा प्राप्त क्यों नहीं कर सकते।

एक जमाअत के बाहर की महिला ने सवाल किया कि मैं अहमदी नहीं हूं। मेरे माता-पिता भी मेरे साथ हैं। जो मेरे साथ मौजूद हैं मेरा सवाल यह है कि आप दुनिया में तब्दीली कैसे लाना चाहते हैं? क्योंकि आज बहुत से लोग हैं जो अहमदी मुसलमानों पर हमला करते हैं और इस तरह से अहमदी मुसलमान सुरक्षित नहीं हैं। तो आप इस स्थिति को कैसे बदलना चाहते हैं? यूरोप और दुनिया के सभी देशों में अहमदी कैसे परिवर्तन ला सकते हैं?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अहमदिया मुस्लिम जमाअत एक धार्मिक जमाअत है। जो मज़हबी जमाअत होती हैं वह सिर्फ एक रात में ही दुनिया में विजय प्राप्त नहीं कर लेती हैं और न ही अपने सभी क्षेत्रों में फैल जाती हैं। बहुत से नबी तक आ चुके हैं। हमारे विश्वास के अनुसार हर देश में नबी गुज़रा है। क्या इन नबीओं ने सारी दुनिया में परिवर्तन किया है? या उन्होंने अपने सभी क्षेत्रों में तब्दीली लाए हैं? ऐसे कई नबी हैं जिन को उन के अपनी क़ौम ने स्वीकार नहीं किया है। उनका संदेश को अस्वीकार कर दिया गया था। यहां तक उन पर अत्याचार हुआ। अंत में, ख़ुदा तआला ने उन क़ौमों को सज़ा दी । हमारा विश्वास यह है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत एक धार्मिक जमाअत है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार इमाम महदी का प्रकटन अंतिम समय में होना था और उस ने आकर इस्लामी शिक्षा को फिर से पुनर्जीवित करने था और इस्लाम का संदेश फैलाना था। इन दिनों में चूंकि मीडिया ने बहुत प्रगति की है, इसलिए आप इस माध्यम से दुनिया के हर कोने के तक सफलता प्राप्त होगी। तो हम बिल्कुल यह काम कर रहे हैं। एक व्यक्ति जिसने यह दावा किया कि वह मसीह मौऊद अलैहिस्सालम है और वह दूर के स्थान कादियान में रहता है जो हिन्दुस्तान के एक प्रान्त पंजाब के में स्थित है, जिधर कोई सड़क नहीं जाती और न ही कोई ट्रेन। उसने उस ज़माने में दावा किया और उसका संदेश इस छोटे से गांव से बाहर फैला और भारत के बड़े शहरों तक पहुंचा और फिर उपमहाद्वीप तक जा पहुंचा और फिर यह संदेश सभी सीमाएं पार कर दूर स्थानों तक पहुंचा बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में, यह संदेश अमेरिका और संयुक्त राज्य अमेरिका तक फैल गया। उस समय से अहमदिया मुस्लिम जमाअत लगातार फैल रही है और अब जो हम तो दुनिया के 212 देशों में फैल चुके है। हर साल अफ्रीका और दुनिया के अन्य भागों में भी एक बड़ी संख्या में अहमदी हो रहे हैं। और हम प्रतिदिन बढ़ रहे हैं और उम्मीद है कि इंशा अल्लाह तआला एक दिन इस्लाम का असली संदेश पूरी दुनिया में फैल जाएगा तथा बहुमत इस संदेश को मान भी लेगा और यह सब अहमदिया मुस्लिम जमाअत के तब्लीग़ी काम से होगा। हम यह तो नहीं कहते कि एक रात में पूरी दुनिया में तब्दीली लाऐंगे, लेकिन हम यह काम जारी रखेंगे, और हम अपना काम नहीं छोड़ेंगे और इंशा अल्लाह तआला एक दिन लोगों के दिल जीतेंगे। हम इस तरह से लोगों को इस्लाम के झंडे के नीचे इकट्ठा करना है जो फिर एक ख़ुदा के सामने झुक जाएंगे और इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबिय्यीन होने को स्वीकार कर लेंगे।

मॉरीशस से संबंधित एक साहिब ने निवेदन किया कि हुज़ूर जब आप का अगला अफ्रीका का दोरा हो तो मॉरीशस को भी याद रखें।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मॉरीशस तो अफ्रीका के क्षेत्र में है जो एशिया के क़रीब है। अगर मैं अफ्रीका जाऊंगा भी, तो मॉरीशस नहीं जा पाऊंगा।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि वह कांगो ब्राज़ील से संबंधित है और वह एक पत्रकार है, और अहमदी नहीं हैं। ख़लीफा को देखकर बहुत ही हैरान हूँ कि ख़लीफा हमारे बीच बैठे हैं और यह बिल्कुल भी वह ख़लीफा नहीं लग रहे जिस इस्लाम और ख़लीफा के बारे में हम सुनते आए हैं। यह काफी अलग हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि इस्लाम तो आप के पास है। मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का भी अध्ययन किया है वह इस्लाम जिस के बारे में हमें हुज़ूर बता रहे हैं वह तो अमन तथा शांति और प्रेम वाला है। हम अब दुनिया को कैसे बदल सकते हैं? हम हर जगह युद्ध और जंग देख रहे हैं। हमें इन युद्धों के पीछे पश्चिमी देशों के हाथ नज़र आ रहे हैं। चाहे वे अफ्रीका में हों या मध्य पूर्व में हों। बड़ी शक्तियां हर जगह पीछे हैं। अब आप दुनिया को कैसे बदलना चाहते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाया: पहली बात तो यह है कि जो ख़िलाफत के बारे में आप कह रहे हैं, तो इस संबंध में स्पष्ट है कि ख़ुद किसी को अनुमति नहीं कि वह कहे मैं एक ख़लीफा हूँ। ख़िलाफत की प्रणाली के लिए एक नियमित नियम है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बयान फरमा दिया है और वह यह कि अंतिम समय में इमाम महदी और मसीह मौऊद आएगा और वह इस्लाम की मूल शिक्षा को फिर से जीवित करेगा। इसके बाद ख़िलाफत प्रणाली फिर से स्थापित होगी। तो यह सच्ची ख़िलाफत है, और इसके साथ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी गारंटी दी कि ख़िलाफत सफल होगी और लोगों के दिलों पर भी हावी होगी।

जैसा कि मैंने पहले इस महिला को उत्तर देते हुए कहा था कि यह सफलता कुछ समय चाहती है। अब एक वह आदमी जिस ने भारत के एक दूरस्थ क्षेत्र में होते हुए दावा किया कि वह मसीह मौऊद था। उस समय न तो कोई परिवहन के माध्यम थे और न ही ऐसी कोई अन्य सुविधाएं थीं। लेकिन फिर भी आपकी मृत्यु के समय, उनके अनुयायियों की संख्या 4 लाख तक पहुंच गई और उन के बाद अब देख रहे हैं कि जमाअत अहमदिया फैलती चली जा रही है। इस एक गांव से एक संदेश फैला और दुनिया भर में 212 देशों में फैल गया है। अफ्रीका में भी बढ़ रहा है। हर साल लाखों लोग जमाअत अहमदिया में प्रवेश करते चले जा रहे हैं। उम्मीद है कि, इन्शा अल्लाह तआला दुनिया के बहुमत के दिल जीतेंगे और वे लोग इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को जानेंगे और शिक्षा यह है कि शांति, प्रेम और सद्भाव।

हमारा इस्लाम कोई नया इस्लाम नहीं है। हमारा इस्लाम वही इस्लाम है जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाए थे और वह शांति और प्रेम वाला है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय वह पहले 13 वर्षों तक फैला नहीं था। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का से हिजरत फरमाई और मक्का वालों ने कम संख्या मदीना के मुस्लिमों पर हमला किया, उस समय अल्लाह तआला ने मुसलमानों को कुरआन करीम में ख़ुद की रक्षा करने की इजाज़त दी कि अब आप लोग उन के उत्पीड़न का उत्तर दे सकते हैं और ख़ुद की रक्षा कर सकते हैं। अगर वह हमला करेंतो अब उन के ख़िलाफ लड़ सकते हैं। यह वह पहला प्रतिरक्षा के युद्ध का आदेश है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिया गया था। साथ यह भी स्पष्ट कर दिया और कुरआन में यह उल्लेख है कि अगर तुम ने उन के अत्याचारों का जवाब नहीं दिया जो न केवल मुसलमानों को मिटाना चाहते थे बल्कि इस धर्म को भी धरती से मिटाना चाहते थे, तो फिर कोई मंदिर synagogue या चर्च या मस्जिद नहीं बचेगी। यह युद्ध का पहला आदेश था जो दिया गया था। इसका मतलब है कि जो आदेश मुसलमानों को दिया गया आदेश वह यह था कि दुश्मनों को उसी रूप से जवाब देंगे जिस तरीके से वे हमला कर रहे थे और इसका उद्देश्य यह था कि धर्म को बचाया जाए। तो सच्चा इस्लाम यह था और आज जो इस्लाम के दुश्मन हैं वह इस्लाम के ख़िलाफ जंग नहीं कर रहे हैं। अब इस्लाम पर हमला करने की शैली बदल गई है। यही कारण है कि हमें इसी तरह जवाब देना होगा। जिस तरह दुश्मन इस्लाम पर हमला कर रहा है, और बिल्कुल यह काम जमाअत अहमदिया कर रही है कि इस्लाम का सच्चा संदेश दुनिया भर में फैलाया जाए और इस्लाम की शांतिप्रिय शिक्षा को दुनिया के सामने रखा जाना चाहिए। हम इस तरह प्रचार कर रहे

हैं कि साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से भी संदेश प्रकाशित कर रहे हैं। जैसा कि मैंने बताया कि हर साल लाखों लोग हमारी जमाअत में शामिल हो रहे हैं। इंशा अल्लाह, एक दिन हम बहुमत में होंगे।

अंत में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई जिस के साथ मुलाकात का प्रोग्राम समाप्त हो गया। इस के बाद 9 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मर्दान जलसा गाह में तशरीफ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास पर पधारे ।

8 सितम्बर 2018 (शनिवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बज कर 50 मिनट पर मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में पधारे। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने डाक को देखा और विभिन्न दफ्तरों के मामलों को देखा। आज कार्यक्रम के अनुसार, लजना जलसागाह में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का लजना के जलसा से संबोधन था।

आज, लजना के जलसा में सुबह के सत्र का आरम्भ 10 बजे हज़रत बेगम साहिबा, मद्दे ज़िल्ला आलिया की अध्यक्षता में दोपहर 11 बज कर 40 मिन्ट तक जारी रही। इस सत्र में, कुरआन और उसके उर्दू जर्मन अनुवाद के इलावा एक उर्दू नज़्म और चार तकरीरें हुईं। जिन में दो उर्दू भाषा में हुईं और दो जर्मन भाषा में थी।

कार्यक्रम के अनुसार, दोपहर 12:00 बजे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लजना जलसा गाह में पधारे। नाज़मा आला तथा नेशनल सदर लजना इमा अल्लाह जर्मनी ने अपनी नाज़मात के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और महिलाओं ने बड़े जोश के साथ नारे बुलंद करते हुए अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया।

मुलाकात में जर्मनी के संघीय मंत्री सुश्री कैटरीना बारली साहिबा भी उपस्थित थी। इज्लास के नियमित आरम्भ से पहले, महोदया ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया और कहा: जर्मनी के राष्ट्रीय ध्वज के साथ, जमाअत अहमदिया का ध्वज भी लहराया गया है, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। अर्थात यहां दोनों के लिए जगह है। आपका यह तरीका है कि आप लोगों से मिलते, संवाद करते और लोगों को हिस्सा लेने के लिए दावत देते हैं ताकि कुधारणा और शंकाएं दूर हों, यह एक बहुत ही सही और उचित तरीका है। धर्म की स्वतंत्रता हमारी प्रणाली का हिस्सा है। इस समय, जर्मनी को इस स्वतंत्रता की रक्षा करने की आवश्यकता है। यह स्वतंत्रता हर जगह नहीं है। दुनिया के विभिन्न देशों में आपकी जमाअत जानती है कि या तो धार्मिक स्वतंत्रता की आज़ादी नहीं दी जाती है और जहां इसे काग़ज़ पर दिया जाता है, वहां उसे व्यावहारिक रूप से नहीं किया जाता है। विभिन्न देशों में आपकी जमाअत पर प्रतिबंध हैं। सदस्यों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है, लेकिन वे भी उत्पीड़न का शिकार हैं। आपकी जमाअत की बातचीत, दिल का प्रसन्नता और माटो कि "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं" है, बहुत प्रमुख है। इस ज़माना में हमें जर्मनी में आप जैसे लोगों की पहले से कहीं अधिक जरूरत है।

महोदया के सम्बोधन के बाद, लज्ना के इस सत्र का नियमित शुरुआत पवित्र कुरआन द्वारा हुआ, जो अजीज़ा दुर्रे अजम हैयूश साहिबा ने की। इस के बाद उर्दू और जर्मन में अनुवाद किया गया। इसके बाद प्रिया अनीका शाकिरा बाजवा साहिबा ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला का कलाम

ख़ुदा से चाहिए लौ लगानी
कि सब फानी हैं वह ग़ैर फानी
वही है राहतो आराम दिल का
उसी से रूह को है शादमानी

के शेर चुने हुए शेअर अच्छी आवाज़ में पढ़कर सुनाए।

बाद में कार्यक्रम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा के क्षेत्र में उच्च सफलता हासिल करने वाली 62 छात्राओं को प्रमाण पत्र प्रदान करे और हज़रत बेगम साहिबा मदज़िल्ला तआला ने उन छात्राओं को पदक पहनाए। शैक्षिक पुरस्कार प्राप्त करने वाले इन सौभाग्यवति छात्रों के नाम निम्नानुसार हैं:

प्रो डॉ मदीहा राना साहिबा (जर्मनी) Habilitation in Psychology

डॉ साइरा अफजल साहिबा (जर्मनी)Ph.D in Bio-Sciences

डा रिदा इनाम साहिबा (जर्मनी) Ph.D in English Language & Literature Studies

सफूर चीमा साहिबा (जर्मनी) State Examination in Human Medicine

साइमा इनाम साहिबा (जर्मनी) State Examination in Human Medicine

ग़ज़ाला अहमद साहिबा (जर्मनी) 2nd State Examination in Teaching

तलअत ज़ुबैर साहिबा (जर्मनी) Magistra Artium in Political Science & German Language & Literature

तलअत ज़ुबैर साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

साइका रूबीना अख़तर साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

नाइला अर्शद साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

अफीफी शब्बीर अहमद साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

अमारा भट्टी साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

निदा हिना अहमद साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

समन माजिद शेख साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

सलमा अहमद साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

मदीहा अहमद साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

निदा रंझा साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

इफ्फत अहमद साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

नौशीन अहमद साहिबा (जर्मनी)1st State Examination in Teaching

मुनतहा शफीक साहिबा (जर्मनी)Master of Science in Health Science

उज़मा हनीफ साहिबा (जर्मनी)Master of Arts in Research in Social Work

मारिया वहीद साहिबा (जर्मनी)Master of Arts in Sociology)

बुश्रा नूर अहमद साहिबा (जर्मनी) Master of Arts in Anglophone Literatures, Cultures & Media

साइरा अहमद साहिबा (जर्मनी) Master in Economics & Finanace Sociology

मारिया अब्बास साहिबा (जर्मनी) Master of Education in Teaching

आयशा मुनव्वर घुम्मन Master of Science in Cardiovascular Science

अनीला अख़तर साहिबा (जर्मनी) Master of Science in Mechanical Engineering

Svea Ahmad साहिबा (जर्मनी) Master of Education in Teaching

मन्सूरा सईद साहिबा (जर्मनी)Master of Education in Teaching

अनअम हैदर साहिबा (जर्मनी)Master of Education in Teaching

तमसीला महमूद साहिबा (जर्मनी)Bachelor of Arts in Teaching Master in Aeronautical Engineering

ज़ैनब अहमद साहिबा (जर्मनी)Bachelor of Arts in Social Work

फरह महमूद साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Education in Education for Secondary School

फातिमा ताहिर साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Science in Medical Physics

समीरा अहमद साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Arts in Education Science

अमतुन्नूर साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Arts in Education Science

मलीहा गौहर राना साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Science in Psychology

नबीला अहमद साहिबा Bachelor of Arts in Islamic Science & Gender Studies

सजीला हसीन साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Arts in Sociology & Cultural Anthropology

सुलतान काहलूं साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Arts in Social Work

नायला वहाब साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Arts in Social Work

कुरअतुल ऐल ख़ालदि साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Arts in Childhood Studies

लुबना राठौर रज़ूज़ाक साहिबा (जर्मनी) Bachelor of Science in Teaching

समीना शाह साहिबा (जर्मनी) A-Levels (Abitur)

सलमान अहमद काहलूं साहिबा (जर्मनी) A-Levels (Abitur)

रख़शनाद गफ़्फार साहिबा (जर्मनी) A-Levels (Abitur)

हुरमैन अहमद साहिबा (जर्मनी) A-Levels (Abitur)

Dr Jeannine Khan(स्वीज़रलैण्ड)Ph.D in Educational Psychology & Didactics

डा मुसव्वरि अहमद साहिबा (कैनेडा) Ph.D in Medical

नूरुल असफा मुनव्वर साहिबा(इन्डोनेशिया)Master of Scinece in Occupatinal Health, Safety & the Environment

फिज़ा अमिर साहिबा(जर्मनी)Master of Science in Medicine

शाइस्ता संबल अहमद साहिबा Master in Communication Marketing

हाफिज़ अंजुम साहिबा(पाकिस्तान)BS (Hons) in Zoology

साकिब नसीर साबिहा (पाकिस्तान)BS (Hons) in Microbiology

अनीसा अबिद साहिबा(नाइजेरिया)Bachelor of Agricultural Technology in Food Science & Nutrition

आमना महमूद साहिबा(स्वीज़रलैण्ड)Bachelor of Medicine in Human Medicine

निदा काहलूं साहिबा (फ्रांस)Primary School Teaching

सादिका बिशारत साहिबा(डेनमार्क) Gymnasium

निबा मुहैमन साहिबा(स्वीडन) Secondary School

मलीहा नबाहत ज़फर साहिबा(कीनिया)Secondary School

नवाल मुबश्शर साहिबा(सऊदी अरब) Secondary School

मलीहा सय्यद साहिबा (जर्मनी)High School

पुरस्कार वितरण समारोह के बाद, 12 बज कर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने संबोधन फरमाया।

ख़िताब हुज़ूर अनवर

तशह्हुद तऊज़ तथा सूरत फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया :

"आज की दुनिया में प्राय: धर्म पर अधिक ध्यान नहीं है, न ही धर्म के इतिहास को जानने की तरफ अधिक ध्यान है। आम तौर पर ऐसा माना जाता है कि धार्मिक दुनिया में या धर्म के इतिहास में केवल पुरुष ही महत्त्वपूर्ण हैं और महिलाओं को कोई महत्व नहीं दिया जाता है, और इस को कुछ इस्लाम विरोधी लोग या धर्म विरोधी लोग अधिक हवा देते हैं। विशेष रूप से इस्लाम पर तो यह आरोप बारबार लगाया जाता है कि महिला की एक गौड़ स्थिति है और जो भी उसकी भूमिका हो या उसका बलिदान पुरुषों से निचले स्तर पर रखा जाता है। पुरुषों की भूमिका और काम की हमेशा सराहना की जाती है और महिलाओं की भूमिका और काम इतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, लेकिन जब हम इस बाती की समीक्षा करें कि क्या धर्म और विशेष रूप से इस्लाम, महिलाओं के धर्म के लिए सेवाएं, महिलाओं का धर्म का तरक्की के लिए भूमिका, औरत की धर्म के लिए कुरबानी, को पुरुषों के बलिदान के लिए, उनकी भूमिका, उनकी सेवाओं से कम समझता है, या इस्लाम में कम समझा जाता है कम महत्त्वपूर्ण माना जाता है, तो उत्तर नकारात्मक होगा, और हर ज्ञान रखने वाली औरत यह जानती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "एक मुस्लिम सबसे अधिक ऐतिहासिक घटनाओं और ज्ञान वर्धक हकीकतों पर जिस चीज़ के लिए या जिस गवाही पर ईमान और विश्वास रखता है,उस को ईमान तथा विश्वास की सीमा तक मानता है, वह कुरआन करीम है और इसमें वर्णित तथ्यों और सत्य हैं, और हमें कुरआन करीम से पता चलता है कि धर्म के इतिहास में महिला का बहुत स्थान है और औरत के सम्मान वाले कामों की अल्लाह तआला ने गवाही दी है और वर्णन किया है और इन अत्यधिक सराहनीय और महत्त्वपूर्ण कार्यों के कारण महिला को पुरस्कार का हिस्सा बना दिया गया है जिन कामों के कारण पुरुष अपने इस पुरस्कार के अधिकारी ठहराए गए हैं या नवाज़े गए हैं।

फिर कुरआन करीम के बाद, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश और आपके निर्देश महिलाओं और इसकी ऐतिहासिक भूमिका के महत्व को उजागर करते हैं। फिर जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में तो इस्लाम और अहमदियत की तारीख इस बात पर भी गवाह है और इस बात पर प्रकाश डालती है कि महिला की भूमिका और बलिदान का क्या महत्त्वपूर्ण स्थान है और हम देखते हैं कि जिस तरह पुरुषों के बलिदान और धर्म के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका को धर्म के इतिहास और विशेष रूप से इस्लाम में संरक्षित किया है वहाँ महिला के बलिदान और भूमिका को भी कम नहीं समझा और सुरक्षित रखा है बल्कि हम समीक्षा करें तो इस्लाम धर्म का आरम्भ ही महिला के बलिदान से होता है। जैसा कि हर मुस्लिम जानता है कि इस्लाम की नींव हज़रत इस्माईल अलैहिस्सालम से रखी गई और इस नींव में महिला का हिस्सा जोड़ा गया था। कुरआन करीम में भी यह भी उल्लेख है और हदीस में भी यह विस्तार से आता है कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को रोया में दिखाया कि वह अपने इकलौते बेटे को ज़िब्ह कर रहे हैं। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पहले और कई साल तक इकलौते पुत्र थे हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम तक अभी जन्म कई सालों बाद हुआ है। बहरहाल हज़रत इस्माईल अलैहिस्सालम अभी कुछ साल के थे जब इब्राहीम अलैहिस्सालम ने यह ख़वाब देखा और हज़रत इस्माईल को सुनाया कि मैंने देखा कि मैं तुम्हें मार रहा था। यह वह ज़माना था जब लोग मूर्तियों को ख़ुश करने के लिए इन्सानों की कुरबानी चढ़ाते थे और विशेष रूप से बेटों को कत्ल करना एक बहुत बड़ी कुर्बानी माना जाता था। यही कारण है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सालम को यह विचार आया कि इन्सानी जान को कुरबान करने की परंपरा तो है तो इस ख़वाब के अनुसार में अपने पुत्र को ख़ुदा के लिए कुरबान करूं और यही अल्लाह तआला चाहता है जो अल्लाह तआला मुझ से चाहता है। यह उन को विचार आया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से उल्लेख किया तो जैसा कि कुरआन में भी आता है हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि आप अपनी रोया को पूरा करें मुझे इंशा अल्लाह उस पर सब्र करने वाला पाएंगे अत: हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सालम उन को बाहर जंगल में ले गए और उलटा लिटा दिया ताकि उस रोया को पूरा करें परन्तु उस समय जब आप ज़िब्ह करने लगे तो कुरआन करीम में आता है कि अल्लाह तआला ने आप को इल्हाम में फरमाया कि "कद सदकता रौंया" अर्थात जब तू अपने बेटे को जिब्ह करने के लिए तैय्यार हो गया तो तूने अपनी ख़वाब पूरी कर दी और यह काम स्पष्ट रूप से दिखाता है कि

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

तू अपने बेटे को ज़िब्ह कर सकता है लेकिन अब तूने इसे ज़िब्ह नहीं करना और अल्लाह तआला ने फरमाया दिया कि आज से धर्म के इतिहास में मनुष्य का वध करने का रिवाज खत्म किया जाता है और यह तरीके सही नहीं है बल्कि अल्लाह तआला के लिए कुरबानियों के लिए नए तकरीके जारी होंगे और जो इस कुर्बानी से बहुत बुलंद हैं। और स्थायी कुरबानी करते चले जाने वाले तरीके हैं।

इसलिए फिर अल्लाह तआला ने फिर आप को इल्हाम फरमाया कि हज़रत हाजरा और उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को मक्का के स्थान पर ले जाएं और वहाँ छोड़ आयें तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को मक्का के स्थान पर ले गए उस वक्त वहां मीलों तक कोई आबादी नहीं थी। आपने अपने साथ पानी का मशकीज़ा और खजूरों की थैली ली थी उन दोनों माता तथा बेटे के पास वह पानी और खजूर की थैली रख दी और उन्हें वहां छोड़ कर वापस चल पड़े। यहां से फिर एक निरन्तर कुर्बानी का क्रम शुरू होता है। जो अल्लाह तआला ने एक इन्सानी जान की कुर्बानी छुड़वा कर करवाई थी वास्तव में रोया में इसी कुर्बानी का वर्णन था न कि छुरी फैर कर कुर्बानी करने का कि इस तरह के स्थान पर छोड़ आओ जहां न भोजन मिले न पीने को पानी मिले मानो यह तुम्हारी तरफ से एक तरह का ज़िब्ह करना है। बहरहाल जब वापसी के लिए मुड़े, तो पत्नी और बेटे की मुहुब्बत के कारण कुछ कदम चल कर फिर रुक गए। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सालम फिर चल पड़ते फिर रुक कर देखने लग जाते। जब कुछ बार इत तरह चल कर कुछ देर मुड़ कर देखते तो हज़रत हाजरा जो बड़ी कुशलता रखने वाली महिला थीं उन्हें विचार पैदा हुआ कि आप हमें यहाँ छोड़ कर किसी मामूली काम के लिए नहीं जा रहे या इधर-उधर कोई जगह देखने खोजने नहीं जा रहे बल्कि ज़रूर कोई राज़ है जो कि आप हम से छुपा रहे हैं। हज़रत हाजरा हज़रत इब्राहीम के पीछे गईं और कहा, "क्या आप हमें अकेले छोड़ कर जा रहे हैं?" उन्होंने इसका जवाब नहीं दिया। हजरत हाजरा समझ गई कि भवनाओं और दिल के दर्द के कारण आप उत्तर नहीं दे रहे हैं अंत में, हज़रत हाजरा ने कहा, "हे इब्राहीम ! आप किसके आदेश से हम को यहां छोड़ कर जा रहे हैं? हज़रत इब्राहीम भावनाओं के कारण कुछ भी नहीं कह सके, परन्तु आसमान की तरफ हाथ उठा कर के इशारा किया। इस पर हज़रत हाजरा ने कहा कि अगर आप हमें यहाँ अल्लाह तआला के आदेश से छोड़ कर जा रहे हैं तो चिंता की कोई बात नहीं। अगर अल्लाह तआला ने कहा है तो वह हमें बर्बाद नहीं करेगा और यह कह कर वापस चली गईं। यह ईमान का स्तर है। आख़िर वह थोड़ा पानी और खुजूर कुछ दिनों में समाप्त हो गई जब खाने-पीने का सामान खत्म हो गया तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जब भी पानी मांगते या खाना मांगते तो वह कहाँ से देतीं। मीलों आबादी कोई नहीं थी न कोई व्यवस्था हो सकती था। अंत हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम प्यास और भूख के कारण बेहोश होना शुरू हो गए। होश आती, तो फिर पानी मांगते। मां बेटे हालत देख कर घबरा कर निकट जो, सफा और मारवा नाम के टीले थे वहां जातीं और इधर पानी या किसी गुज़रने वाले काफिला को तलाश करतीं। पहले सफा पर चढ़ जाती वहीं से कुछ नज़र न आता तो मर्वा पर दौड़ कर चढ़ जातीं दौड़ कर जाने का एक कारण यह भी था कि दौ टीलों के मध्य में जो नीचा स्थान था वहां से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सालम दिखाई नहीं दे रहे थे। व्याकुल हो कर ऊपर चढ़तीं ताकि बच्चा पर भी नज़र पड़ती रहे। जब आप सात चक्कर लगा चुकीं तो फरिशते की आवाज़ आई कि हाजिरा जा अपने बच्चे के पास अल्लाह तआला ने जल का प्रबंधन कर दिया है अत: जब आप बच्चे के पास पहुंचीं तो देखा जहां बच्चा तड़प रहा था वहाँ पानी का चश्मा फूट पड़ा है इस तरह वहां पानी के कारण फिर कफिले ठहरना शुरू हो गए और मक्का की नींव पड़ी। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का की नींव पड़ी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सालम ने पुन: जब मक्का की नींव रखी तो यह दुआ की कि हे ख़ुदा शहर के निवासियों और मेरी औलाद में ऐसा नबी भेज जो उन्हें तेरी आयतें पढ़कर सुनाए तेरी किताब सिखाए उसकी हिकमतें वर्णन करे और उनके दिलों को शुद्ध करे। अर्थात मक्का की जो नींव रखी गई वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि के आगमन के लिए थी और इसमें पुरुष और महिला दोनों शामिल थे। अगर हज़रत हाजरा अल्लाह तआला पर भरोसा न करतीं और बच्चे के साथ कुर्बानी के लिए तैयार न होतीं, तो उन्हें कभी वह स्तान न मिलता जो हर मुस्लिम के दिल में है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिर कुरआन में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ का उल्लेख मिलता है उन्हें अल्लाह तआला ने बताया कि उनके यहां एक बच्चा पैदा होगा। और फिरौन क्योंकि तुम लोगों का दुश्मन है वह उसे मारने का इरादा करेगा इसलिए जब वह पैदा हो तो एक टोकरी में रख कर उसे नदी में डाल देना और हज़रत मूसा की माँ का जो नेकी और धर्मपरायणता और अल्लाह तआला की हस्ती पर भरोसा था इस कारण उन्होंने ऐसा ही किया और यह परवाह न कि नदी में मेरा बच्चा डूब भी सकता है यह टोकरी जंगलों में पता नहीं कहाँ कहाँ जा सकती है किसी जानवर के हत्थे चढ़ सकती है फिरौन से तो शायद बच्चे को बचाने के लिए कोई नुस्खा हो सकता था नदी में कोई संभावना नहीं थी, लेकिन पूर्ण भरोसा था ख़ुदा तआला की हस्ती पर था, इसलिए, यह त्वरित अनुपालन का एक साहसिक कदम है जो शायद एक करोड़ों में एक महिला भी न कर सके केवल एक सपने के कारण बच्चे को नदी में डाल सका, बल्कि संभवत: नस्लों में कोई इस तरह का आदमी पैदा हो जो यह कुर्बानी कर सके लेकिन उन्होंने की और फिर इसी से फिर हज़रत मूसा बचे।

फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के संदर्भ में ही एक और महिला की कुर्बानी का भी वर्णन मिलता है जो फिरऔन की बीवी थी जिसने फिर नदी में बहते हुए बच्चे को फिरौन को किसी तरह राज़ी कर के परवरिश के लिए ले लिया। फिरौन की पत्नी भी हर समय यह दुआ करने वाली थी, हे अल्लाह तू शिर्क के अन्धेरे को दूर कर और दुनिया में सच्चाई स्थापित कर दे। अब देखें कि राजा की पत्नी है हर प्रकार के आराम और शानदार रहने वाली है और फिर फिरौन जैसे व्यक्ति के साथ रहने वाली है जो अपने आप को अल्लाह तआला की तुलना में खड़ा करता था लेकिन प्रकृति की नेकी और साहस और अल्लाह तआला से संबंध ने इस तरह की परिस्थितियों के बावजूद, उन्हें सब कुछ ठुकरा कर एक ही ख़ुदा की गुकूमत पैदा करने का दर्द पैदा किया। तब अल्लाह तआला ने भी इस कर्म की सराहना की और इस तरह की स्थिति दी कि कुरआन में इसका उल्लेख किया। अब ये दोनों महिलाएं एक धर्म की नींव रखने के लिए भूमिका अदा करने वाली थीं।

फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सालम की मां ने भी महान त्याग किए, अपने बेटे को सलीब पर लटकते हुए देखा और इस दृश्य को बहुत साहस से देखा। शायद ही कोई मां हो, औरत हो जो इस तरह नज़ारा देख सके और इस तरह कुर्बानी के लिए तैयार हो। अत: कि धर्म के इतिहास ने महिला के स्थान और कुर्बानी को संरक्षित किया है।

फिर इस्लाम के इतिहास में हम अधिक यह देखते हैं कि हज़रत ख़दीजा ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि की पहली वह्य से लेकर जब आप ने दावा किया और आप का विरोध शुरू हुआ तेरह साल तक गहन पीड़ा में आपका साथ दिया। एक अमीर महिला जिसने न केवल अपने पति को अपनी सारी संपत्ति सुपुर्द कर दी, बल्कि शुअब अबी तालिब में भूखी प्यासी रह कर कुरबानी करती रहीं, और यह कुर्बानी लगभग तीन साल तक जारी रही। इसी तरह अन्य मुस्लिम महिलाएं भी कठिनाइयों और परेशानियों से गुज़री हैं, जिन की कुर्बानियों को तारीख़ ने संरक्षित किया है।

फिर, यदि ज्ञान और हिक्मत की बातों का वर्णन हो तो यह नहीं है कि महिला को अज्ञानी बना दिया गया है और केवल पुरुषों को ज्ञान और हिक्मत की समझ माना जाता है। इस्लाम के इतिहास ने महिलाओं के ज्ञान और हिक्मत को भी संरक्षित किया है। उदाहरण के लिए, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : कि अगर किसी को धर्म का ज्ञान सीखना हो, तो आधा धर्म आयशा से सीखें। यानी मैंने उसकी ऐसी प्रशिक्षण कर दी है उसमें ऐसी क्षमताएं पैदा हो चुकी हैं कि धर्म के मुद्दों और विशेष रूप से महिलाओं के मुद्दों को आयशा से सीखो। तो आज हम देखते हैं कि बहुत सारी रिवायतें महिलाओं के मामलों के बारे में भी हज़रत आयशासे हमें मिलती हैं और पुरुषों का प्रशिक्षण भी हज़रत आयशा ने किया कुरआन को देख लें हर जगह मस्लों के बयान में, आदेशों और पुरस्कारों में स्त्री और पुरुष दोनों का उल्लेख है, अगर पुरुष की नेकी की चर्चा है तो महिला को भी नेक कहा गया है, पुरुष की इबादत का उल्लेख है तो महिला को भी इबादत करने वाली कहा गया है, जन्नत में पुरुष जाएंगे तो औरतें भी जाएंगी, जन्नत में पुरुष उच्च स्थान प्राप्त करेंगे तो महिलाएं भी करेंगी, अगर किसी नेक पुरुष के कारण उसकी पत्नी कम नेकी के बावजूद जन्नत में जा सकता है तो किसी उच्च प्रकार की नेकियाँ करने वाली महिला की वजह से कम नेकी करने वाला पति भी इस वजह से जन्नत में जा सकता है, जन्नत में अगर उच्च स्थान पर पुरुष अपनी नेकियों कारण होंगे तो इसी उच्च स्थान पर औरतें भी होंगी।

फिर यह भी रिवायत मिलती है कि एक महिला नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और निवेदन किया कि पुरुष हम से अधिक अल्लाह तआला के अंतरंग हैं कि वह जिहाद में शामिल होते हैं और हम न हों। आप ने फरमाया ठीक है तुम भी शामिल हो जाए। आप ने इनकार नहीं किया इसलिए जब

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 24 January 2019 Issue No. 4

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

वह शामिल हुई और इस युद्ध में मुसलमानों की जीत हुई तो बावजूद सहाबा के यह कहने के कि उसने इतना हिस्सा नहीं लिया युद्ध में जितना हम ने लिया है और हम लड़े हैं इसलिए लूट में हिस्सा देने की जरूरत नहीं है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया :, नहीं इस को भी धन में हिस्सा दिया जाएगा। फिर इस के बाद यह तरीका बन गया कि मर्द जब जिहाद में जाते, तो महिलाएं भी मरहम पट्टी के लिए साथ जाएं। अत: कि महिलाओं ने बाहर निकल कर जिहाद भी किया और सभी खतरों के बावजूद पुरुषों के साथ विविध जिम्मेदारियों को अदा करने के लिए जिहाद में जाती थीं लेकिन यह भी रिवायतों में आता है कि युद्ध का भी उन्होंने प्रशिक्षण लिया। यह सोच उन की थी कि अल्लाह तआला के लिए हम ने हर तरह की कुरबानी के लिए तैय्यार होना है। धर्म की पहली प्राथमिकता थी। दुनिया की इच्छाओं की उनके निकट कोई हैसियत न थी।

अत: आज भी अगर हम दावा करते हैं कि हम ने दुनिया में इस्लाम की शिक्षाओं को फैलाना है, तो व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग करना पड़ेगा। अपने पतियों और अपने बच्चों के अन्दर यह भावना पैदा करनी होगी कि धर्म पहले है और ख़ुदा की प्रसन्नता प्राप्त करना पहली प्राथमिकता है। अल्लाह तआला और उसका रसूल का प्यार पहले है और बाकी मुहब्बतें बाद में हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : केवल बड़े और महत्त्वपूर्ण लोगों के उदाहरण को इतिहास ने सुरक्षित नहीं किया बल्कि ग़रीब और असहाय लोगों की कुरबानी भी इस्लाम के इतिहास ने संरक्षित की गई है। जैसे लबीना एक सहाबिया महिला थीं बनू आदि की एक दासी थी इस्लाम लाने से पहले उम्र उन्हें इतना मारते थे कि मारते मारते थक जाते थे और फिर दम लेकर उन्हें मारने लग जाते थे। हजरत लबीना सामने से केवल इतना कहती थीं कि उम्र यदि तुम ने इस्लाम स्वीकार न किया तो ख़ुदा इस क्रूरता को नहीं छोड़ेगा। यह भरोसा था उन को अल्लाह तआला की हस्ती पर। फिर ज़नीरह एक महिला थी बनू मखज़ोम की दासी थी और अबु जेहल ने इस बेरहमी से उनका मारा की उन की आंख़ें जाती रहीं नज़र समाप्त हो गई। इसी तरह हज़रत अम्मार माँ हज़रत समिया जो बूढ़ी थीं उनकी जांघ में इस्लाम दुश्मनी की वजह से अबू जहल ने इस तरह भाला मारा कि उनके पेट से बाहर निकल गया और शहीद हो गए। ऐसी कई घटनाएं हैं जो मुस्लिम महिलाओं की कुर्बानियां हैं। ये घटनाएं क्यों सहेजे गए इसलिए कि बाद में आने वाले अपना इतिहास जान सकें उन्हें पता चले कि ख़ुदा के लिए और ख़ुदा के धर्म की महानता के लिए कुर्बानी देनी पड़ती हैं और महिला और पुरुष की कुर्बानी से ही राष्ट्र बना करते हैं केवल पुरुषों की कुर्बानी से क़ौमें नहीं बनती, बल्कि न केवल औरत की कुर्बानी से क़ौमें बनती हैं, बल्कि दोनों की कुरबानी से बढ़ती हैं और अल्लाह तआला के धर्म की महानता भी स्थापित होती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हम अहमदी तो इस लिहाज़ से भी भाग्यशाली हैं कि इस ज़माने में जबकि इस्लाम के पुनरोद्धार का ज़माना है अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है ताकि इस्लाम की सुन्दर शिक्षा दुनिया में फैलाएं। जब आप ने दावा किया तो मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम और सभी ने आप का विरोध किया था। मुसलमान उलेमा आप पर और आप की जमाअत पर कत्ल के फतवे दिए कि एक तो आप ने नबी होने का दावा किया है जो बाकी मुसलमान कहते हैं हम किसी तरह मानने को तैयार नहीं। दूसरे तलवार के जिहाद को अब उस समय ग़लत करार दिया है तो आप ने बड़ा स्पष्ट कहा कि मेरा दावा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि की ग़ुलामी में ग़ैर शरई नबी होने का है। मैंने अगर नबी होने का दावा किया है, तो आप की ग़ुलामी में नबी होने का दावा किया है ग़ैर शरई नबी होने का दावा किया है आप की शरीयत का प्रसार करने के लिए दावा किया है और इस्लाम की शिक्षा को दुनिया में प्रबल करने के लिए दावा है और ख़ुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने आने वाले मसीह मौऊद को नबीउल्लाह कहा है इसी तरह जिहाद की जो धारणा तुम प्रस्तुत करते हो उसकी इस ज़माने में कोई आवश्यकता नहीं है कि इस्लाम पर हमले अब किताबों और साहित्य और अन्य माध्यमों से हो रहे हैं वही माध्यम तुम धारण करो और इस्लाम की सुन्दर शिक्षाओं को दुनिया में को बताओ और यही आने वाले मसीह मौऊद के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि वह युद्ध का अंत करेगा और जो जिहाद है वह अब प्रचार और साहित्य और अन्य मीडिया के माध्यमों से होगा और इसमें पुरुषों को भी भाग लेने की ज़रूरत है और महिलाओं को भी भाग लेने की ज़रूरत है लेकिन इस बात को तथाकथित विद्वान मानने को तैयार नहीं थे और इसलिए उन्होंने अहमदियों पर अत्याचार किए अहमदियों को कुर्बानी देनी पड़ी और पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी जान माल कुर्बानियां दें और धर्म के प्रकाशन के लिए अपनी भावनाओं और अपनी औलाद की भी कुर्बानी दीं अपनी संपत्ति की कुर्बानी दी ताकि इस्लाम की सुन्दर शिक्षाओं के माध्यम से जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के माध्यम से हमें मिली हैं वे दुनिया में पहुंचे। आज, पुरुषों के साथ अहमदी महिलाओं के कुर्बानियों का नतीजा यह है कि आज अहमदियत तथा वास्तविक इस्लाम का संदेश दुनिया के 200 से अधिक देशों तक पहुंच गया है। आज यदि इस्लाम को शांतिपूर्ण धर्म के नाम पर दुनिया में कहीं जाना जाता है, तो यह अहमदियत के कारण है। तो आज आप लोग जो मेरे सामने बैठी हैं आप याद रखें कि आप लोगों का यहां आना भी अहमदी पुरुषों और महिलाओं के कुर्बानी के कारण है आ रहे हैं। अहमदियत का दुनिया में फैलाना वाली दुनिया में रहने वाली महिलाओं और पुरुषों की कुर्बानी के कारण है, विशेष रूप से जिन देशों में जहां अहमदियों पर अत्याचार हो रहे हैं, अहमदी पुरुषों और महिलाओं दोनों ने कुर्बानी की है। आप लोगों का यहां आना उन लोगों की महिलाओं की कुर्बानी और धर्म की सुरक्षा के कारण है और अब तक, ये कुर्बानियां चल रही हैं। कुछ कुर्बानियां महिलाओं की इस तरह से हैं कि पहली सदियों की यादें ताज़ा हो जाती हैं।

कुछ मामलों में, औरतों की कुर्बानियों को देखकर आश्चर्य होता है इन कुरबानियों को देख कर। यह न केवल पाकिस्तान में बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में, यह क्रम जारी है धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने के और धर्म के लिए अपने परिवारों और बच्चों की परवाह न करने के उदाहरण मौजूद हैं। जैसे डॉ नूरीन साहिबा थी पाकिस्तान में केवल 28 वर्ष के थे और उनके पति डॉ शाराज़ केवल 37 वर्ष के थे। दोनों अपने अपने क्षेत्र में चिकित्सा क्षेत्र में विशेषज्ञ थे मुल्तान में उन्हें केवल इसलिए शहीद किया गया कि यह दोनों ज़माने के इमाम को स्वीकार करने वाले थे। क्रूर तरीके से उनका गला घोंट कर मारा गया। फिर 2010 ई में जब दारुल ज़िक्र और मॉडल टाउन में हमारी मस्जिदों पर हमले हुए हैं बड़ी संख्या में अहमदी शहीद किए गए तो कुछ युवा बच्चे भी इस राह में कुर्बान हुए और उस पर माताओं की प्रतिक्रिया यह थी कि हम हर कुर्बानी के लिए तैयार हैं एक मां ने कहा कि मैंने अपनी गोद से जवान बेटे ख़ुदा तआला की गोद में रखा दिया। एक माता-पिता का एकमात्र बेटा था तीन बेटियां थीं, जो मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहा था, जब वह शहीद हुआ तो माता-पिता ने कहा कि हम भी जमाअत के लिए कुर्बानी के लिए तैयार हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अल्लाह तआला आप सबको तौफ़ीक़ दे कि हमेशा धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने के अहद को पूरा करती रहें। और अल्लाह तआला और उसके रसूल की मोहब्बतों को सब मुहबतों पर प्राथमिकता दें। इस्लाम की शिक्षाओं की वास्तविक तस्वीर अहमदी औरतों में नज़र आती हैं। अहमदियत की सुन्दर शिक्षा का प्रदर्शन अपनी कथ्नी तथा करनी से करने वाली हों, और मैं इस व्यावहारिक अभिव्यक्ति के माध्यम से लोगों के दिलों को जीतने वाली हों। अहमदियत के लिए हर कुर्बानी के लिए तैयार हों। यहां आकर, दुनिया की वासना के बजाय, अल्लाह तआला की मुहब्बत की भावना हर व्यक्ति और इसके हर आदेश पर चलने की भावना प्रत्येक इच्छा पर हावी हो। अत: उन कुरबानी की घटनाओं और अपनी तारीख़ को केवल ज्ञान और आन्नद लेने के लिए न सुनें और पढ़ें बल्कि यह प्रतिबद्धता करें कि हम अपने जन्म के उद्देश्य को पाना है और अपनी नस्लों को भी इसे पाने वाला बनाना है और वह है अल्लाह तआला और उसके रसूल की मुहब्बत और अल्लाह तआला का वास्तविक आबिद बनना है। अल्लाह तआला इसकी सब को तौफीक़ प्रदान करे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad